

“सफलता केवल मंजिल पाने का नाम नहीं, बल्कि हर दिन स्वयं को कल से बेहतर बनाने का नाम है।”

# परिवहन विभाग द्वारा किए गए यह सभी कार्य सिर्फ भ्रष्टाचार नहीं, यह “अनुच्छेद 21, 14, 19(1)(d)” और “मूकेश बनाम स्टेट (निर्भया) 2017” सुप्रीम कोर्ट निर्णय के खिलाफ है।

प्रधान सचिव परिवहन को 6-सूत्रीय पत्र : 4-पहिया को 3-पहिया दिखाकर फिटनेस, पंजीकरण, परमिट का फर्जीवाड़ा - यह सिर्फ भ्रष्टाचार नहीं, महिला सुरक्षा और सड़क सुरक्षा पर सीधा हमला!

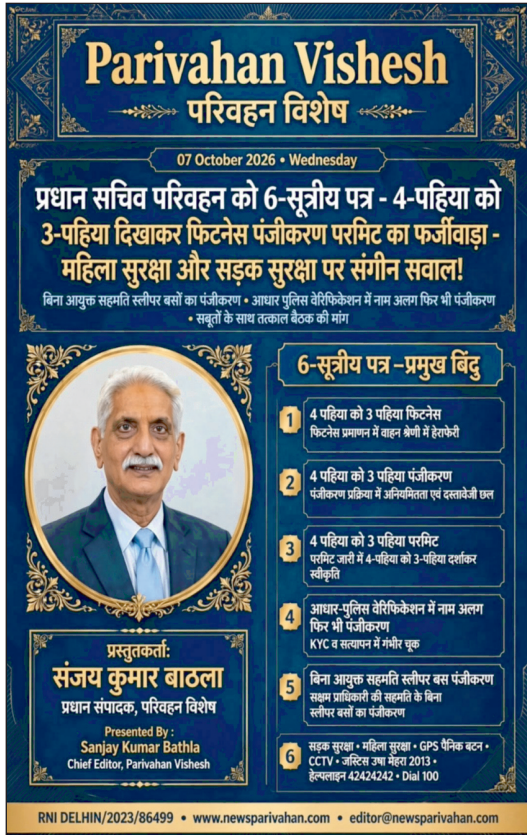
बिना आयुक्त की सहमति स्लीपर बसों का पंजीकरण, आधार-पुलिस वेरिफिकेशन में नाम अलग फिर भी पंजीकरण - प्रधान संपादक संजय कुमार बाठला ने सबूतों के साथ मांगा तत्काल बैठक का समय

प्रस्तुतकर्ता: संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक, परिवहन विशेष / Presented By Sanjay Kumar Bathla, Chief Editor, Parivahan Vishesh

**भूमिका:** प्रधान संपादक संजय कुमार बाठला द्वारा आज प्रधान सचिव परिवहन दिल्ली एवं आयुक्त परिवहन विभाग सुश्री निहारिका राय, IAS को ईमेल के माध्यम से 6 अति महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान आकर्षित कर तत्काल बैठक का समय मांगा गया। यह पत्र सिर्फ भ्रष्टाचार का मामला नहीं, बल्कि संविधान के अनुच्छेद 21 - जीवन और व्यक्तिगत सुरक्षा के अधिकार और महिला सुरक्षा से जुड़ा संगीन मामला है।

**मुख्य तथ्य - 6 सूत्रीय मांग:**

- 1. 4 पहिया को 3 पहिया की फिटनेस:** CMVR 1989 के नियम 62 के तहत फिटनेस प्रमाण पत्र वाहन की श्रेणी के अनुसार जारी होता है। 4 पहिया माल/यात्री वाहन को 3 पहिया ऑटो की श्रेणी में फिटनेस देना - MV Act 1988 की धारा 56 और 59 का सीधा उल्लंघन।
- 2. 4 पहिया का 3 पहिया में पंजीकरण:** CMVR नियम 47 और MV Act धारा 41 के तहत पंजीकरण में वाहन की श्रेणी, इंजन, चैसिस, व्हील-बेस अपरिवर्तनीय है। श्रेणी बदलकर पंजीकरण - फर्जी दस्तावेज, धोखाधड़ी और साजिश।
- 3. 4 पहिया को 3 पहिया परमिट:** MV Act धारा 72, 74 और दिल्ली परमिट रूल के अनुसार परमिट वाहन श्रेणी के अनुसार। गलत श्रेणी में परमिट जारी करना - अवैध संचालन को वैधता देना।



**4. आधार और पुलिस वेरिफिकेशन में नाम अलग, फिर भी पंजीकरण:** आधार अधिनियम 2016, क्रिमिनल वेरिफिकेशन गाइडलाइन और Justice Usha Mehra Commission Report (22 Feb 2013 - Nirbhaya Case के बाद) में स्पष्ट - सार्वजनिक परिवहन वाहन चालक/मालिक का सत्यापन अनिवार्य। नाम अलग होने पर भी पंजीकरण - राष्ट्रीय सुरक्षा और महिला सुरक्षा से खिलवाड़।

**5. बिना आयुक्त सहमति स्लीपर बसों का पंजीकरण:** MoRTH Gazatte Notification GSR 1396 (E) dt 27.12.2017 & AIS-119 और Delhi High Court Order in W.P.(C) 8794/2017 - Association of Sleeper Bus Operators के अनुसार स्लीपर बस का मॉडल अप्रुव, बॉडी अप्रुव और



आयुक्त की विशेष सहमति अनिवार्य है। बिना सहमति पंजीकरण - माननीय न्यायालय के आदेश की अवहेलना।

**6. सड़क सुरक्षा और महिला सुरक्षा:** MoRTH Notification GSR 1095 (E) dt 28.11.2016 - सभी सार्वजनिक वाहनों में VLT with GPS, Panic Button अनिवार्य। Justice Usha Mehra Commission की सिफारिश 42, 43, 44 - CCTV, GPS, कंट्रोल रूम, महिला हेल्पलाइन 42424242 का Dial 100 और Transport Control Room से इंटीग्रेशन। इसका पालन न होना - संविधान के अनुच्छेद 14, 19(1)(d) और 21 का उल्लंघन।

**संवैधानिक और न्यायिक आधार:**

- अनुच्छेद 21: सुरक्षित यात्रा हर नागरिक का मौलिक अधिकार
- Justice Usha Mehra Commission 2013: हर

सार्वजनिक वाहन में GPS, CCTV, महिला सुरक्षा हेल्पलाइन

**- Supreme Court in Mukesh & Ors vs State (Nirbhaya) 2017:** महिला सुरक्षा के लिए परिवहन विभाग की जवाबदेही

**- MoRTH SOP 2020:** फिटनेस और पंजीकरण में अनियमितता पर अधिकारी की व्यक्तिगत जिम्मेदारी

**निष्कर्ष:** यह 6 बिंदु सिर्फ फाइल की गलती नहीं, बल्कि एक संगठित प्रणालीगत विफलता है जो सीधे तौर पर दिल्ली की लाखों महिलाओं और यात्रियों की जान को खतरे में डाल रही है। प्रधान सचिव से बैठक की मांग इसलिए है कि सबूतों के साथ यह सिद्ध किया जा सके कि यह भ्रष्टाचार + महिला असुरक्षा + सड़क असुरक्षा का संयुक्त अपराध है।

RNI DELHIN/2023/86499  
http://www.newsparivahan.com  
editor@newsparivahan.com

## रिश्वतखोरी - समस्या या समाज की स्वीकार की हुई आदत

ईमानदारी को हमने मुश्किल का नाम क्यों बना डाला?

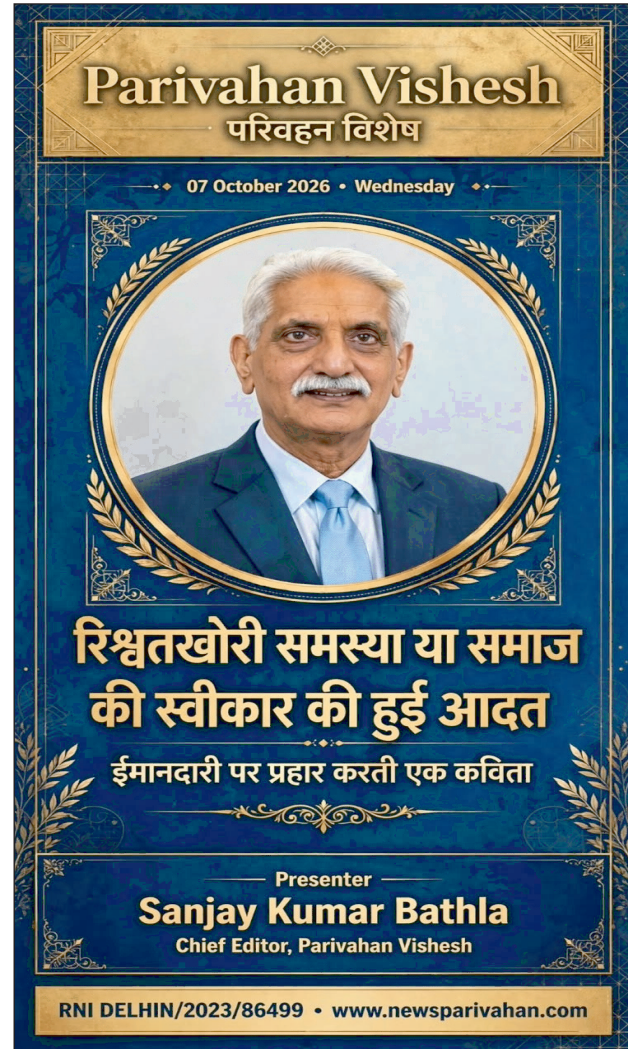
प्रधान संपादक संजय कुमार बाठला की कलम से भ्रष्टाचार की जड़ों पर प्रहार करती ज्वलनशील कविता विश्लेषण

कवि किशन सनमुखदास भावनानी  
गोंदिया महाराष्ट्र

**भूमिका:** भ्रष्टाचार पर अक्सर हम व्यवस्था को दोष देते हैं, लेकिन क्या कभी खुद से पूछा है कि क्या रिश्वतखोरी हमारी आदत बन गई है? परिवहन विशेष के प्रधान संपादक द्वारा प्रस्तुत कवि किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र की यह कविता इसी आत्ममंथन को उजागर करती है।

**मूल कविता:**

- > ईमानदारी को हमने क्यों, मुश्किल का नाम बना डाला है,
- > भ्रष्टाचार की राह को, सुविधा का काम बना डाला है,
- > बिना चक्र काटे काम हो जाए, इसी चाह में बढ़ते जाते हैं,
- > फिर पूछते हैं, समाज में भ्रष्टाचार क्यों बढ़ते जाते हैं।
- > रिश्वत देने वाला कहता है, मेरा काम तो जल्दी हो जाएगा
- > लेने वाला सोचता है, मेरा भी घर इसी से चल जाएगा
- > दोनों की छोटी-सी सहमति, बड़ी बीमारी बन जाती है,
- > जब से निकली रिश्वत, व्यवस्था की जड़ हिला जाती है।
- > कानून भले ही कठोर बने, जब सोच हमारी बदलती नहीं,
- > भ्रष्ट हाथों को रोकने वाली, जनचेतना जब चलती नहीं,
- > बम सुविधा के बदले अपना, ईमान गिरवी रख देते हैं,
- > भ्रष्टाचार की कैड़ी दीवारों पर दोष व्यवस्था का धर देते हैं
- > जिस दिन काम कराने को रिश्वत, देना हम दुकराएँ,
- > जिस दिन गलत रास्ते की सुविधा पर, सही राह अपनाएँ
- > उस दिन कानून अकेला नहीं, जनबली भी रंग दिखाएँ,
- > ईमानदारी का छोटा कदम, बड़ा बदलाव ले आएँ।
- > भ्रष्टाचार न केवल कानून की, यह समाज की भी कहानी है
- > हर रिश्वत के पीछे छिपी, हमारी



मजबूरी या मनमानी है

- > जहाँ से बदलाव वहीं से होगा, जहाँ खुद से सवाल करेंगे
- > काम सही है तो रिश्वत क्यों? और ईमान से जवाब करेंगे।

**तथ्य और विश्लेषण:**

**मुख्य बिंदु 1 - सुविधा की मानसिकता:** हम बिना लाइन, बिना चक्कर के काम चाहते हैं, और यही जल्दबाजी रिश्वत का बाजार बनाती है।

**मुख्य बिंदु 2 - दोहरी सहमति का अपराध:** Prevention of Corruption Act 1988 (संशोधित 2018) की धारा 7, 7A और 8 के अनुसार देने वाला और लेने वाला दोनों दोषी।

**मुख्य बिंदु 3 - जनचेतना का**

अभाव: कठोर कानून अकेले नहीं, जब तक नागरिक ईमानदारी को संस्कार नहीं बनाएँगा, व्यवस्था नहीं सुधरेगी।

**मुख्य बिंदु 4 - समाधान - आत्म-प्रश्न:** 'काम सही है तो रिश्वत क्यों?' यही एक सवाल अगर हर नागरिक पूछ ले, तो भ्रष्टाचार की दीवार गिर जाएगी।

**संपादकीय निष्कर्ष:** यह कविता आरोप नहीं, आईना है। यह परिवहन विभाग में फिटनेस, पंजीकरण, परमिट में चल रहे फर्जीवाड़े से लेकर हर दफ्तर तक लागू है। बदलाव कानून से नहीं, सोच से शुरू होगा।

http://www.newsparivahan.com  
editor@newsparivahan.com

**टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत**  
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com



पिकी कुंझू

SEBI की पहल से निवेश धोखाधड़ी पर लगाम लगाएँ। पूरा भारत निवेश को समझेगा और सही तरीका जानेगा! SEBI प्रस्तुत करता है: “समझ से इन्वेस्टिंग सिंपल” चेतनावनी: निवेश धोखाधड़ी में भारी धनराशि गँवाना बंद करें। SEBI Saaँrthi ऐप का उपयोग करें (प्रामाणिक मार्गदर्शन और उपकरणों के लिए) नागरिकों को सही ज्ञान से सशक्त बनना चाहिए ताकि हर निवेश निर्णय सत्यापन, जागरूकता और विश्वास पर आधारित हो, न कि भ्रामक वादों पर। - जानकारी सुरक्षित निवेश की नींव है। - उच्च लाभ = उच्च जोखिम। निवेश से पहले सत्यापित करें। - केवल SEBI-पंजीकृत प्लेटफॉर्म और विश्वसनीय वित्तीय चैनल का उपयोग करें। **पहल की मुख्य बातें:** - समझ से इन्वेस्टिंग सिंपल SEBI का प्रमुख निवेश जागरूकता कार्यक्रम है। - यह जटिल वित्तीय



अवधारणाओं को सरल मार्गदर्शन में बदलता है। - नागरिकों को निवेश से पहले SEBI के सत्यापित संसाधनों की जाँच करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। **क्यों जरूरी है:** - भारत में निवेश धोखाधड़ी, नकली ट्रेडिंग ऐप्स और पोजी स्कीम्स के मामले बढ़ रहे हैं। - जागरूकता की कमी से भारी वित्तीय नुकसान होता है, खासकर पेशेवरों और वरिष्ठ नागरिकों को। - SEBI की पहल सत्यापन, सतर्कता और रिपोर्टिंग की संस्कृति को बढ़ावा देती है। **निवेशकों के लिए व्यावहारिक सुरक्षा उपाय:** 1. STOP - अज्ञात लिंक या ऑफर पर क्लिक करने से पहले

रुकें। 2. CHECK - किसी भी वित्तीय ऐप या कंपनी का SEBI/RBI पंजीकरण सत्यापित करें। 3. CALL - केवल आधिकारिक हेल्पलाइन का उपयोग करें, WhatsApp या अज्ञात नंबर नहीं। 4. REPORT - धोखाधड़ी की रिपोर्ट करने के लिए 1930 डायल करें या cybercrime.gov.in पर जाएँ। **सत्यापित संसाधन:** - वेबसाइट: investor.sebi.gov.in/ssis - ऐप: SEBI Saaँrthi App (प्रामाणिक मार्गदर्शन और उपकरणों के लिए) **जन-जागरूकता रणनीति:**

- डिजिटल अभियान: सोशल मीडिया पोस्ट, WhatsApp फ्रॉनटवर्ड्स और इन्फोग्राफिक्स। - सामुदायिक अभियान: RWAs, अस्पताल, बैंक और स्कूल। - पेशेवर जागरूकता: डॉक्टरों, वकीलों और वित्तभोगी कर्मचारियों के लिए विशेष सत्र। युवा सहभागिता: कॉलेज सेमिनार और इंटरैक्टिव वर्कशॉप्स। निवेश केवल पैसे का विषय नहीं है—यह विश्वास और ज्ञान का विषय है। SEBI की समझ से इन्वेस्टिंग सिंपल पहल के साथ भारत उस भविष्य की ओर बढ़ेगा, जहाँ हर रुपया समझदारी से निवेश होगा, हर नागरिक सुरक्षित रहेगा और हर धोखाधड़ी की रिपोर्ट होगी।

परिवहन विशेष समाचार पत्र से जुड़े सभी पाठकों और सहयोगियों के लिए विशेष सूचना

परिवहन विशेष समाचार पत्र को जिस तरह आप लोगों के सहयोग लगातार पिछले 3 वर्षों से प्राप्त हुआ और दिन प्रतिदिन आपकी आवाज को आगे पहुँचाने में आपका सहयोगी बना उसको देखते हुए परिवहन विशेष समाचार पत्र के प्रबंधक मंडल और ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड कंपनी द्वारा जनहित, जनकल्याण जनसूचना और जानकारी को और तेजी से भारत सरकार और राज्य सरकारों के साथ सभी राजनीतिक संगठनों को सबसे पहले पहुँचाने के उद्देश्य से अक्टूबर माह से जनता की आवाज का अपना चैनल “परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन” शुरू करने का निर्णय लिया है।

## जल्द आपके बीच में....

### परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन

बड़ी खुशखबरी! अब आपकी आवाज गुंजेगी पूरी दुनिया में परिवहन विशेष समाचार पत्र के सफल 3 वर्षों के बाद अब नई क्रांति

आशा करते हैं की हम अपने चैनल के माध्यम से आपको 1. प्रतिदिन की देश विदेश की जानकारी 2. आपके वह आपके बच्चों के कैरियर, 3. आपके बच्चों के भविष्य से संबंधित जानकारी 4. आपकी सेहत से जुड़ी सभी उपयोगी जानकारी 5. शारीरिक बीमारियों से बचने के तरीके 6. धार्मिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान विश्व के सभी क्षेत्रों के जानदताओं के माध्यम से प्रदान करने का प्रयास करेंगे। हम अपने चैनल द्वारा प्रतिदिन एक घंटे के कार्यक्रम “जनता की पुकार” में आपकी आवाज को विश्व के सामने प्रस्तुत कर सरकार और सरकारी विभागों के साथ माननीय न्यायालयों से उसके उचित हल और उसके प्रति पालिसी लागू करवाने में मध्यांतर का माध्यम बनेंगे। आप सभी से अनुरोध आप के अपने शुरू होने वाले चैनल के माध्यम से अपनी शिकायतें, परेशानियाँ और अनुभव अन्य सभी से साझा करने के लिए तैयार एवं तत्पर रहे। आशा करते हैं जैसे आपने आज के इस दौर में “परिवहन विशेष समाचार पत्रों” को इतना आगे ले कर जाने में सहयोग दिया उसी प्रकार हमारे द्वारा आपकी आवाज बनने के लिए शुरू किए जा रहे “परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन” को विश्व का सबसे बड़ा चैनल बनवाएंगे।

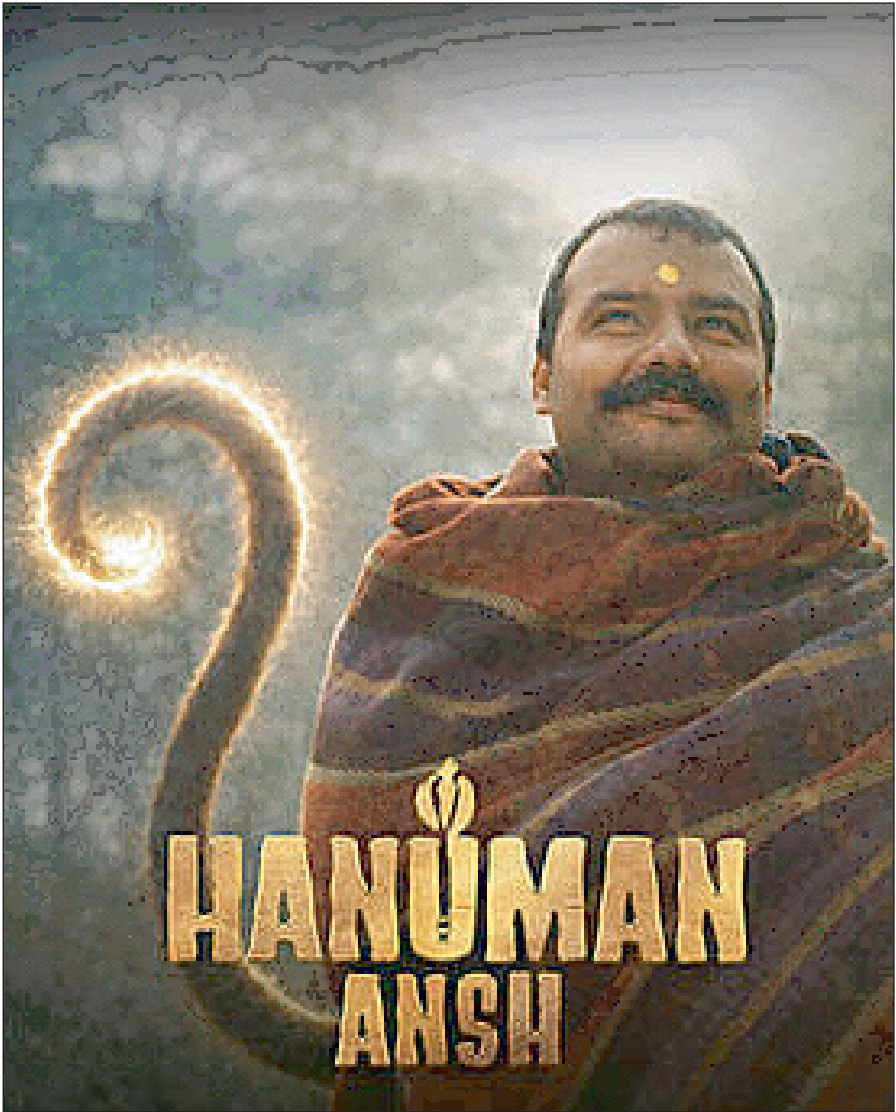








# हनुमान अंश : सिनेमा के पर्दे से जागती सनातन चेतना : सुबोध



**सुबोध चंद्र  
संगठन मंत्री विश्व हिंदू  
परिषद इंद्रप्रस्थ प्रांत  
परिवहन विशेष  
समाचार पत्र दैनिक**

## जब सिनेमा मनोरंजन से आगे बढ़कर संस्कार, भक्ति और आत्मचेतना का माध्यम बन जाए

“सिनेमा के पर्दे पर जब भक्ति दिखाई देती है, तो कभी-कभी दर्शक केवल कहानी नहीं देखता—वह अपने भीतर सोई हुई आस्था को पहचानता है। किसी फिल्म की सफलता को

सामान्यतः उसके बजट, प्रचार, कलाकारों और बॉक्स ऑफिस के आंकड़ों से मापा जाता है। लेकिन कुछ फिल्में ऐसी होती हैं जिन्हें इन पैमानों में बांधना संभव नहीं होता। वे केवल फिल्म नहीं रहतीं, वे समाज की किसी गहरी आवश्यकता की अभिव्यक्ति बन जाती हैं। ‘हनुमान अंश’ ऐसी ही एक फिल्म के रूप में सामने आई है। कई दशकों के बाद भारतीय सिनेमा में ऐसा अवसर देखने को मिला जब एक फिल्म ने मनोरंजन की सामान्य परिभाषा से आगे बढ़कर भक्ति, अध्यात्म, परिवार, संस्कार और सनातन

चेतना को एक साथ जोड़ने का प्रयास किया। इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि शायद यह नहीं कि इसने कितनी कमाई की, बल्कि यह है कि इसने परिवारों को फिर से सिनेमाघरों तक पहुंचाया और दर्शकों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का अवसर दिया।

जब सिनेमाघर में दिखाई दिया भारत हनुमान अंश’ को देखने के लिए सिनेमाघर में बैठा दर्शक अपने आप में एक दृश्य है। एक ओर दादा-दादी, दूसरी ओर माता-पिता और उनके साथ छोटे-छोटे बच्चे। कहीं युवा बैठे हैं, कहीं बुजुर्ग। यह केवल दर्शकों की भीड़ नहीं, बल्कि भारतीय परिवार का एक ऐसा चित्र है जिसे पिछले कुछ वर्षों में सिनेमाघरों में कम ही देखने को मिला। पिछले कुछ दशकों में मुख्यधारा के सिनेमा के एक बड़े हिस्से में बढ़ती मर्यादाहीनता, अनावश्यक हिंसा, नशे और परिवार के साथ न देखे जा सकने वाले विषयों के कारण अनेक भारतीय परिवारों ने सिनेमाघरों से दूरी बना ली थी। उन्हें लगता था कि मनोरंजन के लिए बच्चों और बुजुर्गों के साथ बैठकर फिल्म देखना कठिन होता जा रहा है। ‘हनुमान अंश’ ने इस दूरी को कुछ समय से दूरी बना ली सही, लेकिन पाटने का कार्य किया।

सिनेमाघर में बैठे परिवारों ने यह अनुभव किया कि मनोरंजन और संस्कार एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। कथा रोचक हो सकती है, प्रस्तुति आधुनिक हो सकती है और विषय भारतीय आध्यात्मिक परंपरा से जुड़ा हो सकता है। यही इस फिल्म का एक बड़ी उपलब्धि है। जयकारों से गुंजाते सिनेमाघर फिल्म का सबसे भावुक क्षण वह होता है जब पर्दे पर नीम करौली बाबा की भक्ति और सनातन सत्य का प्रसंग सामने आता है। कहीं से आवाज आती है—“नीम करौली बाबा की जय !” फिर कहीं से—“जय श्रीराम !” और देखते ही देखते पूरा सभागार जयघोष से भर उठता है।

बच्चों के चेहरे पर उत्साह, युवाओं के भीतर उमड़ती श्रद्धा और बुजुर्गों की आंखों में दिखाई देती नमी—ये दृश्य किसी फिल्म समीक्षक की रेटिंग से कीर्ण अधिक

महत्वपूर्ण हैं। ये इस बात का प्रमाण हैं कि भारत की सनातन चेतना कहीं गई नहीं थी। वह केवल अपनी अभिव्यक्ति के लिए उचित माध्यम की प्रतीक्षा कर रही थी। कभी-कभी समाज के भीतर बहुत कुछ जीवित रहता है, लेकिन उसे अभिव्यक्त करने वाला संघ नहीं मिलता। ‘हनुमान अंश’ ने शायद उसी अभिव्यक्ति के लिए एक मंच प्रदान किया है।

**नीम करौली बाबा : कथा से अधिक जीवन का संदेश**

फिल्म का केंद्र नीम करौली बाबा का जीवन और उनका आध्यात्मिक दर्शन है। लेकिन इसकी विशेषता यह है कि बाबा को केवल किसी चमत्कारी संत के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय उनके जीवन से जुड़े भक्ति, सेवा, करुणा और आत्मपरिवर्तन के संदेश को सामने लाने का प्रयास किया गया है। यही भारतीय संत परंपरा की विशेषता रही है। हमारे यहां संत केवल पूजा के पात्र नहीं रहे। वे समाज के शिक्षक भी रहे हैं। उन्होंने मनुष्य को बाहर की दुनिया जीतने से पहले अपने भीतर के विकारों पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा दी।

भारतीय संत परंपरा का मूल संदेश यही है कि मनुष्य की वास्तविक यात्रा बाहर से भीतर की ओर है। इसीलिए ‘हनुमान अंश’ की कथा में संघर्ष किसी बाहरी खलनायक से अधिक मनुष्य के भीतर दिखाई देता है—अहंकार से सम्पर्ण का, स्वार्थ से सेवा का, भ्रम से सत्य का और अस्थिरता से आत्मचेतना का। दादा और पोते के संवाद में संस्कारों की कहानी फिल्म का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष उसका कथानक प्रस्तुत करने का तरीका है। दादा और पोते के संवाद के माध्यम से बाबा के जीवन और उनके विचारों को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का प्रयास किया गया है। यह केवल कहानी कहने की तकनीक नहीं है। यह भारतीय परिवार की उस परंपरा की पुनस्मृति है जिसमें दादा-दादी परिवार के जीवित इतिहास हुआ करते थे। उनके पास केवल अनुभव नहीं होता था, बल्कि संस्कारों का खजाना होता था। एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को कहानियों के माध्यम से

राम, कृष्ण, हनुमान, संतों और महापुरुषों के जीवन से परिचित कराती थी। आज मोबाइल फोन और डिजिटल माध्यमों ने संवाद के अनेक नए रास्ते खोले हैं, लेकिन पीढ़ियों के बीच प्रत्यक्ष संवाद कम हुआ है। ऐसे समय में दादा और पोते का संवाद हमें यह स्मरण कराता है कि संस्कार का सबसे प्रभावी माध्यम परिवार ही है।

**सुनील लोधी : बंद आंखों से खुलती आध्यात्मिक दृष्टि**

‘हनुमान अंश’ से जुड़ी सबसे प्रेरणादायक बातों में बुंदेलखंड के दृष्टिबाधित गायक सुनील लोधी की यात्रा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जिस व्यक्ति ने औपचारिक संगीत शिक्षा प्राप्त नहीं की, जिसने लता मंगेशकर जैसे महान कलाकारों के गीत सुन-सुनकर संगीत साधना की और कभी स्थानीय ट्रैनो में गीत गाकर जीवनयापन किया, उसकी आवाज आज व्यापक समाज तक पहुंच रही है। यह केवल एक कलाकार की सफलता नहीं है। यह उस भारत की कहानी है जो प्रतिभा को पहचानने की क्षमता रखता है। यह उस भारत की कहानी है जिसमें साधना संसाधनों की मोहताज नहीं होती। और यह उस भारत की कहानी है जहां बंद आंखों वाला एक कलाकार अपने सात्विक सुरों से करोड़ों लोगों की आध्यात्मिक आंखें खोल सकता है। शायद यही इस फिल्म की सबसे सुंदर और पवित्र उपलब्धि है। जब कला व्यापार से ऊपर उठकर साधना बनती है फिल्म निर्माण आज एक बड़ा उद्योग है। इसमें करोड़ों रुपये का निवेश होता है, प्रचार के बड़े अभियान चलते हैं और सफलता का मूल्यांकन मुख्यतः आर्थिक और वित्तीय चतुर्वेदी ने किया है, जबकि 21 वर्षीय अनुग्रिया नागर ने निर्माण की जिम्मेदारी संभाली। अर्थशास्त्र की पढ़ाई दूसरी पीढ़ी को कहानियों के माध्यम से

में उतरने वाली एक युवा प्रतिभा का इस प्रकार के आध्यात्मिक विषय से जुड़ना अपने आप में महत्वपूर्ण है। यह संदेश देता है कि युवा पीढ़ी केवल पश्चिमी जीवनशैली की नकल करने वाली पीढ़ी नहीं है। वह अपनी जड़ों को भी समझना चाहती है। वह आधुनिकता और परंपरा के बीच संघर्ष नहीं, बल्कि दोनों के बीच संतुलन खोज रही है।

**बॉक्स ऑफिस से बड़ा है सामाजिक प्रभाव**

‘हनुमान अंश’ की आर्थिक सफलता की चर्चा भी हुई है। सवा चार सौ करोड़ रुपये से अधिक की कमाई का आंकड़ा इसके व्यावसायिक प्रभाव को रेखांकित करता है। लेकिन इस फिल्म को केवल बॉक्स ऑफिस की दृष्टि से देखना उसके महत्व को सीमित कर देगा। वास्तविक प्रश्न यह है कि इस फिल्म ने दर्शकों के मन में क्या छोड़ा ? यदि कोई फिल्म देखने के बाद एक कच्चा अपने दादा से नीम करौली बाबा के बारे में पूछता है, कोई युवा भक्ति और सेवा के बारे में विचार करता है, कोई परिवार अपने बच्चों के साथ संतों की कथा पर चर्चा करता है और कोई कलाकार अपनी प्रतिभा को समाज के लिए उपयोगी बनाने का संकल्प लेता है—तो उस फिल्म की कमाई केवल टिकट खिड़की पर नहीं होती। उसकी असली कमाई समाज के मन में होती है। भारतीय दर्शक क्या है ? इसका उत्तर शायद बहुत सरल है। भारतीय दर्शक आधुनिक मनोरंजन से दूर नहीं भागता। वह अच्छी तकनीक चाहता है, अच्छी कहानी चाहता है, उत्कृष्ट अभिनय चाहता है। लेकिन वह भी चाहता है कि उसकी अपनी संस्कृति का सम्मान हो। वह अपने परिवार के साथ बैठकर फिल्म देखना चाहता है। वह अपने बच्चों को ऐसी कहानियां दिखाना चाहता है जिनसे उनके भीतर जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टि विकसित हो। वह ऐसा मनोरंजन चाहता है जिसमें नशा,

हिंसा और मर्यादाहीनता को आधुनिकता का पर्याय न बनाया जाए। वह अपने इतिहास, संस्कृति, संतों और परंपरा को आधुनिक भाषा में देखना चाहता है। ‘हनुमान अंश’ की सफलता इस बदलती हुई दर्शक-मानसिकता का एक संकेत हो सकती है।

**युवा और सनातन : विरोध नहीं, संवाद**

आज के भारत का युवा विज्ञान और अध्यात्म दोनों को साथ लेकर चल सकता है। वह अंतरिक्ष में भारत की उपलब्धियों पर गर्व कर सकता है और साथ ही हनुमान जी के प्रति श्रद्धा भी रख सकता है। वह आधुनिक शिक्षा प्राप्त कर सकता है और अपने दादा-दादी के चरण भी छू सकता है। वह वैश्विक मंच पर काम कर सकता है और अपने संस्कारों को भी जीवित रख सकता है। इसलिए सनातन का अर्थ अतीत में लौटना नहीं है। सनातन का अर्थ है—अपनी जड़ों से शक्ति लेकर भविष्य की कमान नहीं बढ़ाना। ‘हनुमान अंश’ की प्रासंगिकता इसी बिंदु पर सबसे अधिक दिखाई देती है। युवा पीढ़ी को केवल यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि उसे क्या नहीं करना चाहिए। उसे यह भी दिखाना होगा कि वह किस महान परंपरा का उत्तराधिकारी है। जब युवा अपने इतिहास, संतों, संस्कृति और आध्यात्मिक परंपरा को समझेगा, तभी उसके भीतर आत्मविश्वास का निर्माण होगा।

**एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण की आहट**

क्या ‘हनुमान अंश’ एक फिल्मी सफलता भर है ? शायद नहीं। इसके आसपास दिखाई देने वाली सामाजिक प्रतिक्रिया यह संकेत देती है कि भारतीय समाज अपनी सांस्कृतिक जड़ों से पुनः संवाद करना चाहता है। इसे सांस्कृतिक पुनर्जागरण की एक छोटी लेकिन महत्वपूर्ण आहट कहा जा सकता है। यह किसी दूसरे विचार या संस्कृति के विरोध का आंदोलन नहीं है। यह अपनी पहचान को समझने और उसे आत्मविश्वास के

साथ जीने की प्रक्रिया है। भारत ने हजारों वर्षों में अनेक सभ्यताओं से संवाद किया है। उसने ज्ञान ग्रहण किया, नए विचार स्वीकार किए और समय के साथ स्वयं को बदला। लेकिन अपनी आत्मा को बचाए रखा। आज भी आवश्यकता इसी संतुलन की है।

**फिल्म उद्योग के लिए संदेश**

‘हनुमान अंश’ फिल्म उद्योग को भी एक स्पष्ट संदेश देती है। दर्शक केवल प्रचार से नहीं आता। दर्शक कहानी से जुड़ता है। भावना से जुड़ता है। अपनेपन से जुड़ता है। यदि फिल्मकारों की नीयत साफ हो और उद्देश्य केवल बाजार नहीं, बल्कि समाज को कुछ देने का हो, तो दर्शक सीमित प्रचार के बावजूद उस फिल्म को अपना सकता है। रामसेतु निर्माण में गिलहरी का योगदान छोटा था, लेकिन उसकी भावना छोटी नहीं थी। उसी प्रकार कला के क्षेत्र में भी छोटे प्रयास बड़े परिवर्तन का आधार बन सकते हैं। यह अंत नहीं, एक शुरुआत है। ‘हनुमान अंश’ की सफलता को केवल एक फिल्म की उपलब्धि मानकर छोड़ देना उचित नहीं होगा। इससे प्रेरणा लेकर ऐसे और प्रयास होने चाहिए जो भारतीय समाज की विविध आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं को आधुनिक माध्यमों में प्रस्तुत करें। भारत में संतों की अनगिनत जीवनीयां हैं। हमारे पास ऋषियों, आचार्यों, महापुरुषों, भक्तों, स्वतंत्रता सेनानियों और समाज सुधारकों की ऐसी हजारों कथाएं हैं जो आज की पीढ़ी को प्रेरणा दे सकती हैं। आवश्यकता केवल उन्हें नए माध्यम और नई भाषा में प्रस्तुत करने की है। ‘हनुमान अंश’ ने यह संभावना दिखाई है कि भारतीय संस्कृति पर आधारित कथा भी आधुनिक दर्शक को आकर्षित कर सकती है और व्यावसायिक रूप से सफल हो सकती है। अब यह यात्रा आगे बढ़नी चाहिए।

**सनातन की ओर लौटना भारत**

आज आवश्यकता केवल यह कहने की नहीं कि हमें अपनी संस्कृति पर गर्व है। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी संस्कृति को जीवन में उतारें।

परिवार में संवाद हो। बच्चों को संस्कार मिलें। युवा सेवा से जुड़ें। समाज में करुणा बढ़े। कला में मर्यादा आए। सिनेमा में सकारात्मकता बढ़े। और आधुनिकता के साथ अपनी सांस्कृतिक पहचान भी मजबूत हो। ‘हनुमान अंश’ ने सिनेमा के पर्दे पर एक ऐसी संभावना दिखाई है। जब हजारों लोग एक साथ जय श्रीराम का उद्घोष करते हैं, जब बुजुर्गों की आंखें नम होती हैं, जब बच्चे उत्साहित होते हैं और जब युवा संतों के जीवन के बारे में जानने के लिए प्रेरित होता है, तब समझना चाहिए कि यह केवल फिल्म नहीं देखी जा रही—एक सांस्कृतिक स्मृति जाग रही है। और यही इस फिल्म की सबसे बड़ी उपलब्धि है। हनुमान जी का जीवन हमें भक्ति के साथ शक्ति, सेवा के साथ समर्पण और सामर्थ्य के साथ विनम्रता का संदेश देता है। नीम करौली बाबा की साधना हमें बताती है कि मनुष्य का जीवन केवल अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए भी होना चाहिए। यदि ‘हनुमान अंश’ देखने के बाद एक भी युवा अपने जीवन में सेवा, संयम, भक्ति और करुणा का एक कदम आगे बढ़ाता है, तो यह फिल्म सफल है। यदि एक परिवार अपने बच्चों के साथ बैठकर अपनी परंपरा की चर्चा करता है, तो यह फिल्म सफल है। यदि एक कलाकार अपनी प्रतिभा को समाज के लिए समर्पित करने की प्रेरणा पाता है, तो यह फिल्म सफल है। और यदि भारत का युवा अपनी संस्कृति को बोझ नहीं, बल्कि अपनी शक्ति मानने लगे—तो यह केवल एक फिल्म की सफलता नहीं होगी। यह भारत की सनातन चेतना के पुनर्जागरण की शुरुआत होगी।

‘हनुमान अंश’ ने एक दीप जलाया है। आवश्यकता है कि उस दीप से असंख्य दीप जलें। क्योंकि सनातन केवल हमारी विरासत नहीं है—सनातन हमारी चेतना है।

**सुबोध चंद्र  
संगठन मंत्री  
विश्व हिंदू परिषद  
इंद्रप्रस्थ प्रांत**

VedicCodes

VASTU • NUMEROLOGY • ASTROLOGY

## आपके दिन की शुरुआत, पारुल भटनागर के साथ

विशेषज्ञ एस्ट्रो न्यूमेरो वास्तु कंसल्टेंट

परिवहन विशेष News

## अंक ज्योतिष भविष्यवाणी • 07 अक्टूबर 2026

दिन का अंक: 1 | नई शुरुआत, नेतृत्व, आत्मविश्वास, स्वतंत्रता और पहल का दिन।

**मूलांक 1 | आज आपका स्वाभाविक अंक विशेष रूप से समर्थित है**

आज पहल, आत्मविश्वास और स्वतंत्र सोच को विशेष समर्थन मिलता है। कोई नया व्यावसायिक या निजी विचार तब गति पकड़ सकता है जब आप स्पष्ट पहला कदम उठाएं। निर्णायक नेतृत्व करें, लेकिन उन लोगों के प्रति धैर्य रखें जिन्हें प्रतिक्रिया देने में अधिक समय चाहिए।

**मूलांक 2 | अपनी जरूरतें शांत आत्मविश्वास से व्यक्त करें**

सहयोग महत्वपूर्ण है, लेकिन आज अपनी प्राथमिकताओं को छिपाना उचित नहीं होगा। रिश्ते या साझेदारी में स्पष्ट संवाद लाभ देगा, बशर्ते आप रक्षात्मक न हों। स्वयं पर भरोसा रखें और सामने वाले के दृष्टिकोण को भी सुनें।

**मूलांक 3 | नए विचार को मजबूत अभिव्यक्ति दें**

आज रचनात्मकता और संवाद को नई ऊर्जा मिलेगी। प्रस्तुति, लेखन, बैठक या नई योजना तब अच्छी शुरुआत ले सकती है जब आपकी बात केंद्रित हो। उत्साह को बहुत दिशाओं में बिखेरने के बजाय एक आशाजनक दिशा चुनें।

**मूलांक 4 | व्यावहारिक योजना के साथ निर्माण शुरू करें**

नई दिनचर्या, व्यवस्था या कार्य जिम्मेदारी आज सफलतापूर्वक शुरू की जा सकती है। आपका व्यवस्थित स्वभाव इरादे को उपयोगी रूप देने में मदद करेगा। यथार्थवादी चरणों से शुरुआत करें और हर विवरण पूर्ण न होने के कारण प्रगति न रोकें।

**मूलांक 5 | नई दिशा तेजी से खुल सकती है**

फोन, बैठक, यात्रा या अचानक मिला संपर्क नई संभावना सामने ला सकता है। आपकी अनुकूलन क्षमता सही प्रतिक्रिया देने में मदद करेगी, लेकिन प्रतिबद्धता से पहले विवरण जांचें। समझदार निर्णय के साथ की गई आत्मविश्वासी शुरुआत लाभ देगी।

**मूलांक 6 | अपनी प्राथमिकताओं के लिए भी स्थान बनाएं**

आप स्वाभाविक रूप से परिवार और रिश्तों को महत्व देते हैं, लेकिन आज अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों का सम्मान करना भी जरूरी है। घर, रचनात्मकता या रिश्ते से जुड़ी नई योजना उत्साह ला सकती है। दूसरों का सहयोग करें, पर स्वयं को हमेशा अंतिम स्थान पर न रखें।

**मूलांक 7 | आंतरिक स्पष्टता को एक व्यावहारिक कदम में बदलें**

चिंतन ने आपको दिशा के बारे में अधिक स्पष्टता दी हो सकती है। आज उस समझ को कार्य में बदलने का समय है। पूर्ण निश्चितता की प्रतीक्षा करने के बजाय एक सार्थक कदम चुनें: शांत शुरुआत समय के साथ महत्वपूर्ण बन सकती है।

**मूलांक 8 | महत्वपूर्ण लक्ष्य की जिम्मेदारी अपने हाथ में लें**

करियर, धन और दीर्घकालिक योजनाएं आज निर्णायक नेतृत्व से लाभ ले सकती हैं। नई रणनीति या जिम्मेदारी सावधानी से संभाली जाए तो आपकी स्थिति मजबूत होगी। अधिकार का रचनात्मक उपयोग करें और अनावश्यक प्रतिस्पर्धा या दबाव से बचें।

**मूलांक 9 | उद्देश्य के साथ नई शुरुआत करें**

हाल का कोई समापन या भावनात्मक मुक्ति नई चीज के लिए स्थान बना सकती है। पुराने विवाद में लौटने के बजाय साहस के साथ आगे बढ़ें। उद्देश्यपूर्ण पहला कदम आपकी ऊर्जा को विकास और नए उत्साह की दिशा में मोड़ सकता है।

**कॉल / व्हाट्सएप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | @vediccodes**

VedicCodes - Your vibrations... our solutions



# विकसित भारत @2047 के सारथी बनेंगे युवा : शेखावत

सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज के तहत दुजाना कॉलेज में युवाओं से हुआ संवाद, नवाचार और उद्यमिता को अपनाने का किया आह्वान

**बेरी (झज्जर), 6 अक्टूबर।** भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प युवाओं की ऊर्जा, नवाचार और सक्रिय भागीदारी से ही साकार होगा। युवाओं की रचनात्मक सोच को जनसेवा और राष्ट्र निर्माण से जोड़ने के उद्देश्य से सेवा संकल्प अभियान के तहत राजकीय महाविद्यालय, दुजाना में 'सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जिला संयोजक दिनेश शेखावत ने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए उन्हें नए विचारों के साथ आगे बढ़ने और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान देने का आह्वान किया। महाविद्यालय के प्राचार्य नसीब सिंह ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया।

**युवा समस्याओं के समाधान के लिए दें नए आइडिया : दिनेश**

जिला संयोजक दिनेश शेखावत ने कहा कि आज का भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है और इसमें युवाओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। अब युवाओं को केवल नौकरी तलाशने तक सीमित रहने के बजाय उद्यमिता, स्टार्टअप और नवाचार के क्षेत्र में आगे बढ़कर रोजगार देने वाला बनने का लक्ष्य रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि 'विकसित भारत केवल योजनाओं और भाषणों से नहीं, बल्कि युवाओं की नई सोच और जमीनी स्तर पर किए गए प्रयासों से बनेगा।'

**नशामुक्त और जिम्मेदार समाज के निर्माण का लिया संकल्प**

कार्यक्रम के दौरान दिनेश शेखावत ने विद्यार्थियों को नशे जैसी सामाजिक बुराइयों से दूर रहने और मजबूत नैतिक चरित्र अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि शिक्षा की वास्तविक सार्थकता तभी है, जब उसका लाभ समाज और राष्ट्र के विकास में मिले। विद्यार्थियों ने नशामुक्त जीवन और राष्ट्र सेवा का संकल्प लिया। कार्यक्रम का समापन भारत माता के जयकारों और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान देने के संकल्प के साथ हुआ।

**आइडिया को उद्योग में बदलने की दी जानकारी**

एमएसएमई विभाग के उद्योग विस्तार अधिकारी नीरज सिंह ने विद्यार्थियों को स्टार्टअप और उद्योग जगत की व्यावहारिक जानकारी दी। उन्होंने केंद्र व हरियाणा सरकार की विभिन्न सब्सिडी योजनाओं, मुद्रा ऋण और युवा उद्यमिता से जुड़ी नीतियों की जानकारी देते हुए बताया कि सही मार्गदर्शन और मेहनत से

कॉलेज स्तर का एक छोटा प्रोजेक्ट भी भविष्य में सफल उद्यम का रूप ले सकता है।

**यह रहे मौजूद**

इस अवसर पर विधानसभा बेरी के सह संयोजक रविंद्र छारा, यादवीर सैनी, अनिल दलाल, जिला उद्योग केंद्र के

उद्योग विस्तार अधिकारी नीरज सिंह, डॉ. सीमा कुंडू, डॉ. रजनी दुआ, डॉ. सुनीता छिक्कारा, डॉ. अनिता खासा, डॉ. सजनी देवी, डॉ. दीपा, डॉ. भागेश्वरी, डॉ. अंजू, डॉ. मीनिका सहित समस्त प्राध्यापकगण और बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।



## 11 अक्टूबर को बहादुरगढ़ बनेगा हरियाणा सफाई महाकुंभ में भागीदार, गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड की तैयारी: डीसी

**परिवहन विशेष न्यूज**

**बहादुरगढ़, 06 अक्टूबर**

देश की राजधानी दिल्ली से सटे औद्योगिक शहर बहादुरगढ़ आगामी 11 अक्टूबर को सुबह 6 बजे से 9 बजे तक हरियाणा सफाई महाकुंभ में भागीदार बनने का रहा है। इस महाकुंभ के माध्यम से झज्जर जिला गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने की मुहिम में अपनी अग्रणी भूमिका निभाएगा। महाकुंभ की तैयारियों को लेकर मंगलवार को लघु सचिवालय में डीसी वर्षा खांगवाल की अध्यक्षता में अधिकारियों की बैठक आयोजित हुई। बैठक में डीसी ने संबंधित विभागों द्वारा की जा रही तैयारियों की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। साथ ही आयोजन स्थल का भी डीसी ने सम्बन्धित अधिकारियों के साथ मौका मुआयना भी किया।

एडीसी एवं डीएमसी जगनिवास ने डीसी का स्वागत करते हुए हरियाणा सफाई महाकुंभ की रूपरेखा साझा की। उन्होंने बताया कि सफाई महाकुंभ बहादुरगढ़ के वेस्ट जुआ ड्रेन रोड पर आयोजित किया जाएगा। इसमें विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी, सामाजिक संगठन तथा अन्य संस्थाएं सक्रिय रूप से भाग लेंगी।

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि इतने बड़े स्तर पर आयोजित होने वाले सफाई महाकुंभ को सफल बनाने के लिए सभी

विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि महाकुंभ से संबंधित सभी व्यवस्थाएं समय रहते पूरी कर ली जाएं और अधिकारी स्वयं फील्ड में रहकर व्यवस्थाओं की निगरानी करें। उन्होंने कहा कि अभियान केवल एक स्थान को सफाई तक सीमित न रहकर स्वच्छता के प्रति नागरिकों में सकारात्मक संदेश देने वाला जनभागीदारी का कार्यक्रम बने। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को सफाई उपकरण, कर्मचारियों की तैनाती, कचरा उठान, परिवहन, पेयजल सहित आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

स्वच्छता कार्य के साथ-साथ सुरक्षा एवं यातायात व्यवस्था पर भी फोकस

डीसी वर्षा खांगवाल ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि हरियाणा सफाई महाकुंभ के दौरान स्वच्छता कार्य के साथ-साथ सुरक्षा एवं यातायात व्यवस्था पर भी विशेष ध्यान

दिया जाए। उन्होंने कहा कि सभी विभाग अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का प्रभावी ढंग से निर्वहन करें और किसी भी स्तर पर आपसी तालमेल में कमी नहीं रहनी चाहिए। उन्होंने कहा कि 11 अक्टूबर को बहादुरगढ़ में होने वाला यह सफाई महाकुंभ स्वच्छता के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी और जनभागीदारी का संदेश देगा। उन्होंने अधिकारियों से आह्वान किया कि इस महाकुंभ को सफल बनाने के लिए पूरी गंभीरता और सक्रियता के साथ कार्य करें।

इस अवसर पर एसडीएम बहादुरगढ़ अभिनव सिवाव, ईओ नगरपरिषद बहादुरगढ़ संजय रोहिल्ला सहित सम्बंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

## जनभागीदारी की भावना से कार्य कर रही सरकार : संजय कबलाना



गांव छारों में 'सेवा मेरा योगदान के तहत' स्वास्थ्य जांच शिविर का भाजपा नेता संजय कबलाना ने किया शुभारंभ

सरकारी योजनाओं का लाभ घर-द्वार तक पहुंचाने का दिया संदेश

**बहादुरगढ़, 06 अक्टूबर।** जिलाभर में डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में चल रहे 'सेवा संकल्प अभियान' के तहत विभिन्न मांड्यूल के अन्तर्गत जनकल्याणकारी गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। इसी कड़ी में मंगलवार को गांव छारा में 'सेवा मेरा योगदान' थीम पर 'स्वास्थ्य जांच कैंप का आयोजन किया गया। वरिष्ठ भाजपा नेता संजय कबलाना ने शिविर का शुभारंभ किया। उप मुख्यचिकित्सा अधिकारी डॉ. कुलदीप और डॉ. राजेंद्र ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया।

इस अवसर पर भाजपा नेता संजय कबलाना ने कहा कि 'सेवा संकल्प अभियान सरकार और

आमजन के बीच मजबूत सेतु का कार्य कर रहे हैं। इन शिविरों का उद्देश्य सरकारी योजनाओं, स्वास्थ्य सेवाओं और जनकल्याणकारी सुविधाओं को पात्र नागरिकों तक उनके गांव और घर-द्वार के नजदीक पहुंचाना है, ताकि लोगों को अपनी समस्याओं और आवश्यक सेवाओं के लिए बार-बार सरकारी कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें।

उन्होंने कहा कि सेवा संकल्प अभियान केवल सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग को साथ लेकर सेवा और जनभागीदारी की भावना को मजबूत करने का अभियान है। उन्होंने ग्रामीणों से सरकार की योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाने तथा अपने आसपास के जरूरतमंद लोगों को भी योजनाओं की जानकारी देने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि स्वस्थ समाज और जागरूक नागरिक ही विकसित एवं आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव हैं।

कैंप के दौरान स्वास्थ्य एवं

आयुष विभाग की ओर से स्वास्थ्य जांच शिविर भी लगाया गया। इसमें ग्रामीणों के स्वास्थ्य की जांच की गई तथा उन्हें स्वस्थ जीवनशैली अपनाने, नियमित स्वास्थ्य जांच करवाने और बीमारी से बचाव के प्रति जागरूक किया गया। चिकित्सकों ने लोगों को स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक परामर्श भी दिया। कार्यक्रम में 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' अभियान के तहत ग्रामीणों को बेटियों की शिक्षा, सुरक्षा और समान अवसरों के प्रति जागरूक किया गया। साथ ही अंगदान के महत्व के बारे में जानकारी देते हुए उपस्थित लोगों को अंगदान की शपथ भी दिलाई गई।

**यह गणमान्य व्यक्ति और स्वास्थ्य अधिकारी रहे मौजूद**

इस अवसर पर सरपंच प्रतिनिधि दीपक, चिकित्सा अधिकारी डॉ. सुखदेव, डॉ. संधी चौधरी, डॉ. रितेश, डॉ. ज्योति, डॉ. सुधीर (आयुष विभाग) तथा बहादुरगढ़ सिविल अस्पताल के विभिन्न विशेषज्ञ चिकित्सक मौजूद रहे।

## झज्जर में आज विकसित भारत संकल्प सभा के साथ निकलेगी सेवा ज्योति यात्रा : डीसी

**\*झज्जर स्थित नेहरू पीजी कॉलेज में होगा जिला स्तरीय कार्यक्रम, बड़ी स्क्रीन पर दिखेगा पीएम मोदी का लाइव संबोधन\***

**\*डीसी वर्षा खांगवाल ने विकसित भारत संकल्प सभा के साथ निकलने वाली सेवा ज्योति यात्रा कार्यक्रम की अधिकारियों के साथ की समीक्षा\***

**\*झज्जर, 06 अक्टूबर\***

जिलाभर में 17 अक्टूबर तक चलाए जा रहे सेवा संकल्प अभियान के तहत विकसित भारत संकल्प सभा के साथ सेवा ज्योति यात्रा पूरे उत्साह के साथ मनाई जा रही है। इसी कड़ी में बुधवार 7 अक्टूबर को झज्जर स्थित राजकीय पीजी नेहरू कॉलेज में भी जिलास्तरीय भव्य आयोजन होगा, कार्यक्रम में हरियाणा सार्वजनिक उपक्रम ब्यूरो के चेयरमैन मोहन लाल कौशिक बतौर मुख्य अतिथि भाग लेंगे।

डीसी वर्षा खांगवाल ने कार्यक्रम की तैयारियों का जायजा लेने उपरांत



अधिकारियों की बैठक भी ली। डीसी ने विकसित भारत संकल्प सभा के साथ आयोजित सेवा ज्योति यात्रा कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए बताया कि राजकीय पीजी कॉलेज झज्जर के सभागार में जिला स्तरीय कार्यक्रम होगा। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी व केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के संबोधन का सीधा प्रसारण होगा।

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में

बहादुरगढ़ के विधायक राजेश जून, पूर्व मंत्री ओमप्रकाश धनखड़, भाजपा जिलाध्यक्ष विकास वाल्मिकी, जिला परिषद के चैयरमैन कप्तान सिंह बिरधाना, भाजपा नेता दिनेश कौशिक व संजय कबलाना, हाउस फेडरेशन के चेयरमैन सुभाष बंसल, सभी नगरपरिषद व नगरपालिका चैयरमैन व ब्लाक समितियों के चैयरमैन व अन्य जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति रहेगी। जिला स्तरीय कार्यक्रम के

समापन पर सेवा ज्योति को क्रिकेट स्टेडियम के मुख्य द्वार पर स्थापित किया जाएगा।

डीसी ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों को विकसित भारत @2047 के संकल्प से जोड़ना है। कार्यक्रम में उपस्थित लोग सामूहिक रूप से यह संकल्प लेंगे और वेदों मातरम्का गायन करेंगे। उन्होंने अधिकारियों से आपसी समन्वय के साथ तैयारियां समय पर

पूरी करने के निर्देश दिए।

**\*यह रहे मौजूद\***

इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष विकास वाल्मिकी, युवा नेता आदित्य धनखड़, नरेंद्र जाखड़ के अलावा जिला प्रशासन की ओर से एडीसी जगनिवास, एसडीएम झज्जर रवि मीणा, जिला परिषद के सीईओ मनीष फौगट, सीटीएम ऋतु सहित सम्बंधित अधिकारी भी मौजूद रहे।

## सेवा संकल्प अभियान- ग्रामीणों के लिए लाभकारी साबित हो रहे सेवा सेतु कैंप

डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन तथा एसडीएम रवि मीणा के निर्देश अनुसार विभिन्न विभागों द्वारा स्टॉल लगाकर दी जा रही योजनाओं की जानकारी खानपुर खुर्द क्षेत्रवासियों ने सरकारी सेवाओं, जनकल्याणकारी योजनाओं व स्वास्थ्य जांच का उठाया लाभ

**झज्जर, 06 अक्टूबर**

सेवा संकल्प अभियान के तहत नागरिकों को सरकारी सेवाओं एवं जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सहज रूप से उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से मातनहेल ब्लाक के गांव खानपुर खुर्द में मंगलवार को सेवा सेतु कैंप का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा नेता दयाकिशन ने सेवा सेतु कैंप का शुभारंभ किया। कैंप में पहुंचने पर बीडीपीओ अर्जुन शर्मा ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। कैंप में बड़ी संख्या में क्षेत्रवासियों ने पहुंचकर विभिन्न विभागों की योजनाओं एवं सेवाओं की जानकारी प्राप्त की और उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाया। डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में मातनहेल क्षेत्र सहित झज्जर जिला में सेवा संकल्प अभियान के तहत सेवा सेतु कैंप लगाकर लोगों को लाभान्वित किया जा रहा है।

**नागरिकों को सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं, सेवाओं और कार्यक्रमों की दी जानकारी**

मुख्य अतिथि दयाकिशन ने बताया कि कैंप में



विभिन्न विभागों की ओर से स्टॉल लगाए गए, जहां विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने नागरिकों को सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं, सेवाओं और कार्यक्रमों की जानकारी दी जा रही है। नागरिकों को योजनाओं के लिए निर्धारित पात्रता, आवेदन प्रक्रिया तथा मिलने वाले लाभों के बारे में भी विस्तार से बताया गया। कैंप में पहुंचने वाले लोगों की समस्याओं एवं जिज्ञासाओं का मौके पर समाधान करने का प्रयास किया गया।

उन्होंने कहा कि सेवा संकल्प अभियान के तहत आयोजित किए जा रहे सेवा सेतु कैंप का उद्देश्य सरकारी योजनाओं और सेवाओं को आमजन के करीब पहुंचाना है, ताकि पात्र नागरिकों को योजनाओं की जानकारी के लिए

अलग-अलग कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें और उन्हें एक ही स्थान पर आवश्यक जानकारी एवं मार्गदर्शन मिल सके।

मुख्य अतिथि दयाकिशन ने ग्रामीणों से आह्वान किया कि वे प्रशासन की ओर से श्रेष्ठतम अनुसार सेवा सेतु कैंप में पहुंचकर विभिन्न विभागों की योजनाओं एवं सेवाओं की जानकारी प्राप्त करें और अपनी पात्रता के अनुसार सरकारी जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाएं।

**स्वास्थ्य संरक्षण, स्वस्थ जीवनशैली के लिए किया प्रेरित**

सेवा सेतु कैंप में स्वास्थ्य एवं आयुष विभाग की ओर से स्वास्थ्य जांच शिविर भी लगाया गया। यहां नागरिकों की स्वास्थ्य जांच करने के



# आज फिर डोली धरती! उत्तराखंड से असम तक तीन राज्यों में भूकंप के झटके, दिल्ली-NCR में दहशत

चमोली में 4.9 तीव्रता का सबसे तेज झटका, नगांव (असम) में 4.5, तामेंगलॉंग (मणिपुर) में 2.9 – विशेषज्ञ बोले, हिमालयी बेल्ट में टेक्टोनिक प्लेटों का दबाव बढ़ा

प्रस्तुति: संजय कुमार बाठला, मुख्य संपादक

मुख्य तथ्य – आज कहां-कहां, कितनी गति से आया भूकंप ?

1. सबसे बड़ा झटका – उत्तराखंड, चमोली:

- समय: 06 अक्टूबर 2026, रात 10:23:13 बजे (IST)
- स्थान: चमोली, उत्तराखंड – अक्षांश 30.103 N, देशांतर 79.561 E
- तीव्रता: रिक्टर स्केल पर 4.9 (NCS) / कुछ एंजेंसी ने 4.4 बताया
- गहराई: 13 किलोमीटर
- असर: झटके दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, गुरुग्राम तक महसूस

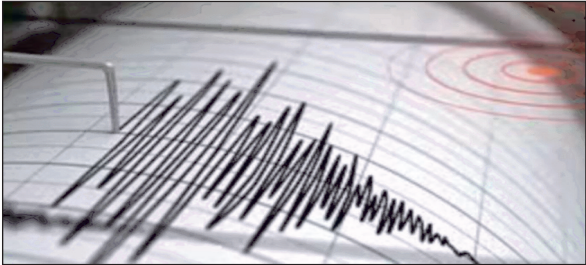
हुए, लोग घरों से बाहर निकले – नुकसान: अभी तक जान-माल के नुकसान की कोई खबर नहीं

2. पूर्वोत्तर में सुबह-सुबह दो झटके:

- असम, नगांव: सुबह 04:23:47 बजे, तीव्रता 4.5, गहराई 33 किमी, केंद्र 26.428 N, 93.060 E झटके गुवाहाटी तक महसूस हुए
- मणिपुर, तामेंगलॉंग: सुबह 04:27:25 बजे, तीव्रता 2.9, गहराई 12 किमी, केंद्र 25.070 N, 93.568 E
- यह भी भूकंपीय दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र माना जाता है

भूकंप आने के मुख्य कारण – विशेषज्ञों की राय क्या है ?

1. टेक्टोनिक प्लेट सिद्धांत (मुख्य कारण) : विशेषज्ञों के अनुसार धरती के अंदर 7 टेक्टोनिक प्लेट्स निरंतर घूमती रहती हैं। जिन स्थानों पर ये प्लेट्स टकराती हैं,



उन्हें फॉल्ट लाइन जोन कहा जाता है। टकराव से दबाव बढ़ता है, किनारे मुड़ते हैं और अंदर जमा ऊर्जा बाहर निकलती है, जिससे धरती कांपती है

2. हिमालयी बेल्ट – सबसे संवेदनशील:

- कश्मीर घाटी और उत्तराखंड Seismic Zone V में आते हैं, जो सबसे खतरनाक श्रेणी है
- यहाँ Indian और Eurasian प्लेटों के टकराव से Himalayan Frontal Thrust (HFT), Main Boundary Thrust (MBT),

Main Central Thrust (MCT) जैसे सक्रिय फॉल्ट बने हैं – वैज्ञानिकों के अनुसार यहां सदियों से तनाव जमा है, जो बड़े भूकंप की आशंका बढ़ाता है

3. पूर्वोत्तर का कारण: पूर्वोत्तर भारत भी भूकंपीय दृष्टि से संवेदनशील है, यहाँ समय-समय पर मध्यम तीव्रता के भूकंप आते रहते हैं

जनहित में सुरक्षा सलाह – जनता क्या करे ?

1. घबराएं नहीं, अफवाहों पर ध्यान न दें, केवल NCS और NDMA की आधिकारिक सूचना

मांगें।

2. भूकंप के दौरान लिफ्ट का प्रयोग न करें, मेज के नीचे छिपें, खिड़की और भारी अलमारी से दूर रहें।

3. BhooKamp App डाउनलोड रखें – NCS की आधिकारिक ऐप है।

4. दिल्ली-NCR के निवासी विशेष सतर्क रहें, क्योंकि उत्तराखंड का झटका 300 किमी दूर तक महसूस हुआ।

निष्कर्ष: आज के तीन झटके राहत की बात है कि हल्के थे और कोई नुकसान नहीं हुआ, लेकिन यह चेतावनी है कि भारत का हिमालयी क्षेत्र सक्रिय है। जागरूकता ही बचाव है –

– संजय कुमार बाठला मुख्य संपादक, परिवहन विशेष

सत्य – सेवा – समाचार – सही खबर, सही समय पर

http://www.newsparivahan.com

## Aaj Phir Doli Dharti

आज फिर डोली धरती — 07 अक्टूबर 2026 | भूकंप अपडेट

**Uttarakhand • Chamoli**  
4.9 Magnitude • 10:23 PM गहराई 12 किमी

**Assam • Nagaon**  
4.5 Magnitude • 4:23 AM गहराई 33 किमी

**Manipur • Tamenglong**  
2.9 Magnitude • 4:27 AM गहराई 12 किमी

**INDIA**  
आज के भूकंप

Magnitude 4+  
Magnitude <3  
Felt Tremors

### सुरक्षा सुझाव / Safety Tips

- Lift का प्रयोग न करें सीढ़ियों का इस्तेमाल करें
- टेबल के नीचे छिपें सिर और गर्दन सुरक्षित रखें
- BhooKamp App डाउनलोड करें सही अंश के लिए

### विशेषज्ञ की राय

टेक्टोनिक प्लेट कोलिजन — हिमालयन बेल्ट सक्रिय, भूकंप हिमालयन क्षेत्र में भारतीय एंड्रोसियन प्लेटों के टकराव के कारण आते हैं। वर्तमान में हिमालय Seismic Zone V (सबसे अधिक सक्रिय क्षेत्र) में दर्जा। विशेषज्ञों के अनुसार हल्के से मध्यम तीव्रता के भूकंप आने की संभावना बनी रहती है; सतर्कता आवश्यक।

### उत्तराखंड, चमोली

Magnitude: 4.9  
Time: 10:23 PM  
Depth: 13 किमी गहराई

### असम, नगांव

4.5 Magnitude  
Time: 4:23 AM  
Depth: 33 किमी गहराई

### मणिपुर, तामेंगलॉंग

2.9 Magnitude  
Time: 4:27 AM  
Depth: 12 किमी गहराई

Presenter: **Sanjay Kumar Bathla** संजय कुमार बाठला  
Chief Editor: **Parivahan Vishesh**  
RNI DELHIN/2023/86499

[www.newsparivahan.com](http://www.newsparivahan.com)  
स्रोत: राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र (NCS) | जनकारी केवल सूचना हेतु

ध्यान दें: यह सूचना प्रारम्भिक है, ताज़ा अपडेट के लिए आधिकारिक स्रोत देखें।

## खनिज संपदा सुंदरगढ़ की, फिर इलाज के लिए भुवनेश्वर क्यों? राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने 1,000-बेड सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल, स्वास्थ्य ढांचे के विस्तार और डीएमएफ के पारदर्शी उपयोग की मांग उठाई



रिपोर्ट ड्रा राजकुमार यादव परिवहन विशेष राउरकेला/सुंदरगढ़

खनिज संपदा से देश और राज्य की अर्थव्यवस्था को मजबूती देने वाले सुंदरगढ़ जिले में स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थिति अब केवल प्रशासनिक चुनौती नहीं, बल्कि क्षेत्रीय न्याय का सवाल बनती जा रही है। राष्ट्रवादी

कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने राज्य सरकार से मांग की है कि सुंदरगढ़ में तत्काल 1,000-बेड का अत्याधुनिक सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल स्थापित किया जाए तथा सुंदरगढ़-संबलपुर-झारसुगुड़ा के स्वास्थ्य ढांचे को खनन प्रभावित आबादी की जरूरत के अनुरूप मजबूत किया जाए।

डॉ. यादव का कहना है कि खनन और औद्योगिक गतिविधियों का पर्यावरणीय एवं स्वास्थ्य संबंधी भार स्थानीय जनता उठाती है, लेकिन गंभीर बीमारी की स्थिति में मरीजों को बुलाओं, कटक अथवा भुवनेश्वर रेफर होना पड़ता है। यह स्थिति विशेष रूप से आदिवासी और ग्रामीण आबादी के लिए आर्थिक बोझ बढ़ाती है।

आंकड़े भी स्वास्थ्य ढांचे की चुनौती की ओर संकेत करते हैं। राज्य सरकार के उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार सुंदरगढ़ जिले में सरकारी अस्पतालों में कुल 635 बेड का उल्लेख है, जबकि पुराने जिला स्वास्थ्य प्रोफाइल में सरकारी और निजी संस्थानों को मिलाकर 2,289 बेड दर्ज किए गए थे। वहीं, अगस्त 2026 में सुंदरगढ़ सरकारी मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में मानव संसाधन की कमी पर राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग ने भी आपत्ति जताई थी। रिपोर्ट के अनुसार 180 स्वीकृत शिक्षण पदों में 57 पद रिक्त थे।

सबसे गंभीर सवाल डीएमएफ को लेकर है। सीएजी की हालिया रिपोर्ट के अनुसार सुंदरगढ़ डीएमएफ से प्रशासनिक मद में

25 करोड़ रुपये का अनियमित उपयोग हुआ। कोविड काल में निजी अस्पतालों में बेड आरक्षित करने के नाम पर सुंदरगढ़ डीएमएफ से 109.45 करोड़ रुपये भुगतान किए गए, जबकि सीएजी ने संभावित 10.60 करोड़ रुपये के अतिरिक्त भुगतान की जांच और वसूली की सिफारिश की।

डॉ. यादव ने कहा कि खनिज प्रभावित जनता के नाम पर आने वाला धन उसी जनता के स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल और पुनर्वास पर प्राथमिकता से खर्च होना चाहिए। उन्होंने सरकार से सुंदरगढ़ में 1,000-बेड अस्पताल की समयबद्ध स्वीकृति, विशेषज्ञ चिकित्सकों की नियुक्ति, आईसीयू-मॉड्यूलर ओटी, कैसर एवं हृदय रोग उपचार जैसी सुपर

स्पेशियलिटी सुविधाएं विकसित करने तथा डीएमएफ खर्च का जिलावार और पंचायतवार श्वेतपत्र जारी करने की मांग की।

उन्होंने संबलपुर में प्रस्तावित दूसरे एम्स को लेकर भी स्थिति स्पष्ट करने की मांग की है। उपलब्ध आरटीआई दस्तावेजों के अनुसार राज्य ने अगस्त 2024 में प्रस्ताव भेजा था, जबकि केंद्र के अक्टूबर 2024 के जवाब में भुवनेश्वर एम्स, बालेश्वर सैटेलाइट केंद्र और बरहामपुर, कटक तथा बुलाओं में स्वीकृत सुपर स्पेशियलिटी सुविधाओं का हवाला दिया गया था।

डॉ. यादव ने कहा कि सुंदरगढ़ को अब घोषणाओं नहीं, बल्कि समयबद्ध स्वास्थ्य परियोजनाओं और जवाबदेह क्रियान्वयन की जरूरत है।

## आखिरकार बदले गए पानपोष के उपजिलापाल चंद्रकांत मल्लिक ईमानदार और निष्ठावान अफसर के तबादले से उठे सवाल—शहर में चर्चा, क्या एकतरफा राजनीति की कीमत चुकानी पड़ी?

ईमानदार और निष्ठावान अफसर के तबादले से उठे सवाल—शहर में चर्चा, क्या एकतरफा राजनीति की कीमत चुकानी पड़ी?

राउरकेला के प्रशासनिक तंत्र की गहरी समझ रखने वाले युवा अधिकारी को हटाना लोगों को नहीं अ रहा रास, एसडीएम के रूप में भी किए कई उल्लेखनीय कार्य

विभाग में उप सचिव नियुक्त किया गया है। उनके स्थान पर भवानीपटना के पूर्व उपजिलापाल प्रभात परिड़ा पानपोष एसडीएम का दायित्व संभालेंगे।

हालांकि सरकारी आदेश प्रशासनिक प्रक्रिया का हिस्सा है, लेकिन चंद्रकांत मल्लिक के तबादले को लेकर राउरकेला में एक अलग तरह की चर्चा और असंतोष दिखाई दे रहा है। शहर के एक वर्ग का कहना है कि एक युवा, सक्रिय और निष्ठावान अधिकारी को ऐसे समय में हटाया जाना अप्रत्याशित है, जब उन्होंने क्षेत्र की प्रशासनिक आवश्यकताओं और विकास संबंधी चुनौतियों को समझते हुए काम करना शुरू किया था। कुछ लोगों के बीच यह सवाल भी उठ रहा है कि क्या एक अच्छे अधिकारी को एकतरफा राजनीतिक समीकरणों का



खामियाजा भुगतान पड़ा? हालांकि इस राजनीतिक आरोप की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है।

मल्लिक की खासियत यह रही कि वे राउरकेला के प्रशासनिक ढांचे और स्थानीय परिस्थितियों से पहले से परिचित रहे हैं। तहसीलदार, आरडीए सचिव और अन्य महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभाने के कारण

उन्हें शहर की प्रशासनिक एवं विकास संबंधी समस्याओं की जमीनी समझ थी। पानपोष एसडीएम का पद संभालने के बाद भी उनके कामकाज को लेकर सकारात्मक प्रतिक्रियाएं सामने आईं।

उनके कार्यकाल में कई प्रशासनिक मामलों में सक्रियता दिखाई गई। ऐसे में अचानक तबादले को लेकर शहर के लोगों का यह सवाल स्वाभाविक है कि जब किसी अधिकारी के पास क्षेत्र की समझ, अनुभव और प्रशासनिक पकड़ हो, तो उसे बीच कार्यकाल में हटाने के पीछे वास्तविक कारण क्या हैं?

मल्लिक के कार्यकाल से जुड़ा सर्किट हाउस प्रकरण जरूर विवाद का विषय बना। सर्किट हाउस में एक आरोपी के ठहरने और बाद में हथियार बरामद होने

के मामले ने प्रशासनिक व्यवस्था पर सवाल खड़े किए थे। इस प्रकरण में पृष्ठताछ और जांच की प्रक्रिया भी सामने आई।

मल्लिक ने 12 फरवरी 2021 को राउरकेला के तहसीलदार के रूप में कार्यभार संभाला था। बाद में वे आरडीए सचिव सहित विभिन्न प्रशासनिक जिम्मेदारियों पर रहे और 7 मई 2026 को पुनः राउरकेला लौटकर पानपोष एसडीएम बने।

अब सवाल सिर्फ तबादले का नहीं, बल्कि उस अधिकारी की उपयोगिता का है जो शहर को भीतर से समझता था। जनता के बीच उठ रही आवाज यही है— अगर किसी अधिकारी ने अच्छा काम किया है, तो उसे हटाने का आधार क्या है और क्या जनता को इसका जवाब नहीं मिलना चाहिए।

## बैरवा समाज के सामाजिक मंथन में एकजुटता पर जोर

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

नई दिल्ली। रानी झांसी रोड स्थित अंबेडकर भवन में दिल्ली की विभिन्न बैरवा समाज संस्थाओं की ओर से 'सामाजिक मंथन 2026' का आयोजन किया गया। इसमें समाज की एकजुटता, सामाजिक विकास और दिल्ली में बैरवा समाज को अनुसूचित जाति की सूची में शामिल कराने की मांग को लेकर मंथन हुआ।

कार्यक्रम के प्रमुख आयोजक मोहनचंद कुंडारा, भगवानदास मिमरोट, श्यामलाल गोठवाल और सतीश भीमवाल रहे। अध्यक्षता वरिष्ठ समाजसेवी एवं समाज के सहयोगी रामनारायण खन्ना ने की, जबकि मंच संचालन इंद्र जोनवाल ने किया। कार्यक्रम में दिल्ली की विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों, वरिष्ठ समाजसेवियों और बड़ी संख्या में बैरवा समाज के लोगों ने भाग लिया। मंच से सूरज प्रकाश गोठवाल, रामकिशन बंसीवाल, रतनलाल बैरवा, मुंशीलाल कुंडारा, योग



गुरु आचार्य मदन सिंह, जयसिंह भारती, एमएल नागरवाल, भूपनारायण जारवाल, रोशन नाकवाल, डॉ. शिवलाल कुंद्रा और सुभाष बैरवा सहित वक्ताओं ने विचार रखे। वक्ताओं ने दिल्ली में बैरवा समाज को अनुसूचित जाति में शामिल कराने की

मांग को लेकर निर्णायक एवं संगठित प्रयास करने पर जोर दिया। साथ ही समाज के पूर्वजों के संघर्ष और त्याग को याद करते हुए उनकी विरासत को आगे बढ़ाने का आह्वान किया गया। बैठक में दिल्ली में बैरवा चौपाल

अथवा धर्मशाला के निर्माण पर भी चर्चा हुई। वहीं आगामी बैरवा दिवस पर दिल्ली में भव्य एवं विशाल आयोजन करने का प्रस्ताव रखा गया, ताकि समाज की एकता और मांगों की आवाज देशभर तक पहुंचे।

अनुसूचित जाति में शामिल कराने की मांग को लेकर एक विशेष समिति गठित करने का निर्णय लिया गया। समिति राजस्थान और मध्य प्रदेश का दौरा कर वहां के बैरवा समाज के नेताओं एवं प्रतिनिधियों से संपर्क करेगी और दिल्ली सरकार तथा केंद्र सरकार के समक्ष मांग को प्रभावी ढंग से रखने की रणनीति तैयार करेगी।

कार्यक्रम में विभिन्न मुद्दों पर गहन चर्चा के बाद समाज की एकता और सामूहिक प्रयासों को आगे बढ़ाने पर सहमति बनी। अध्यक्ष रामनारायण खन्ना ने कार्यक्रम में शामिल सभी बैरवा बंधुओं का आभार व्यक्त किया। उपस्थित समाजजनों ने आयोजन की सफलता के लिए मुख्य आयोजकों को बधाई दी।

## फर्जी जीएसटी बिलिंग मामले में अवैध कार्यप्रणाली वाले ट्रेडरों पर शिकंजा कसने की मांग



राउरकेला जीएसटी कार्यालय में गुड्स ट्रांसपोर्टर एसोसिएशन की मुलाकात, ओवरलॉडिंग और बंद लिफाफे के बिलों का मुद्दा उठा

रिपोर्ट ड्रा राजकुमार यादव परिवहन विशेष राउरकेला

फर्जी जीएसटी बिलों, अवैध इनपुट टैक्स क्रेडिट और ओवरलॉड वाहनों के कारण आम ट्रांसपोर्टर एवं वाहन मालिकों को हो रही परेशानियों को लेकर राउरकेला गुड्स ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के प्रतिनिधिमंडल ने सिटी एन्ड जीएसटी (इनफ़ोर्सेमेंट) कार्यालय पहुंचकर विभाग के वरीय अधिकारी मानस दास से मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल ने ट्रांसपोर्टर व्यवसाय से जुड़े जमीनी स्तर के मुद्दों को सामने रखते हुए फर्जीवाड़े के खिलाफ विभागीय कार्रवाई तेज करने की मांग की। बैठक में विशेष रूप से फर्जी बिलों की

आड़ में संचालित कारोबार, ट्वेंटी ट्वेंटी ट्रिप, फर्जी जीएसटी इनपुट, ओवरलॉड वाहनों तथा बंद लिफाफे में बिलों के कथित इस्तेमाल का मुद्दा उठाया गया। एसोसिएशन ने कहा कि फर्जीवाड़ा करने वाले कुछ तत्वों की गतिविधियों का खामियाजा उन ट्रांसपोर्टरों और वाहन मालिकों को भुगतान पड़ता है, जिनका ऐसे लेन-देन से प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता। प्रतिनिधिमंडल ने अधिकारियों के समक्ष यह चिंता भी रखी कि कई मामलों में स्थिति 'करता कोई है और भरता कोई है' जैसी बन जाती है। वास्तविक ट्रांसपोर्ट व्यवसायी दस्तावेजों और कानूनी प्रक्रिया का पालन करने के बावजूद जांच, नोटिस और वित्तीय दायित्वों के कारण परेशान होते हैं। इससे न केवल व्यवसाय प्रभावित होता है, बल्कि ईमानदारी से काम करने वाले वाहन मालिकों पर भी अनावश्यक दबाव पड़ता है। एसोसिएशन ने विभाग से आग्रह किया

कि भविष्य में उपलब्ध कराई जाने वाली सूचनाओं के आधार पर संदिग्ध बिलिंग नेटवर्क, फर्जी इनपुट टैक्स क्रेडिट और संबंधित कारोबारियों की गहन जांच कर दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। साथ ही वास्तविक ट्रांसपोर्टरों को फर्जीवाड़े से अलग पहचानने की व्यवस्था मजबूत करने की मांग की गई।

वरीय अधिकारी मानस दास ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त किया कि मामले में नियमानुसार उचित कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि सरकार ऐसे मामलों पर नजर रखे हुए है और उपलब्ध तथ्यों एवं सूचनाओं के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

प्रतिनिधिमंडल में एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव, महासचिव मानस महंती, उपाध्यक्ष शंकर लाल शर्मा, वरिष्ठ सदस्य संजोत सिन्हा, गौतम राय (बबलू) तथा जगन्नाथ पंडा सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

## यातायात नियम बोझ नहीं, जीवन की सुरक्षा का कवच: एसपी ट्रैफिक अमित कुमार श्रीवास्तव



रिपोर्ट विनय कुमार मिश्र, परिवहन विशेष समाचार पत्र गोरखपुर

गंगोत्री देवी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय एवं गंगोत्री देवी स्कूल ऑफ नर्सिंग में मंगलवार को यातायात जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में एसपी ट्रैफिक अमित कुमार श्रीवास्तव ने छात्राओं को यातायात नियमों और सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक किया। उन्होंने कहा कि यातायात नियम बोझ नहीं, बल्कि जीवन की सुरक्षा का कवच हैं। सड़क पर बरती हुई कुछ क्षणों की असावधानी स्वयं के साथ पूरे परिवार के लिए आजीवन पीड़ा का कारण बन सकती है। उन्होंने दोपहिया पर हेलमेट, चार पहिया में सीट बेल्ट, गति सीमा का पालन, वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग न करने और नशे में वाहन न चलाने की अपील की। उन्होंने कहा कि सड़क पर अनुशासन ही सुरक्षित घर वापसी की सबसे बड़ी गारंटी है। यातायात उपनिरीक्षक मनोज कुमार राय ने यातायात संकेतों और सड़क पार करने के सुरक्षित तरीकों की जानकारी दी। यातायात मित्र संजय श्रीवास्तव ने जन-जागरूकता में भागीदारी के लिए प्रेरित किया। महाविद्यालय के प्रबंध निदेशक आशुतोष मिश्र ने कहा कि सड़क सुरक्षा किसी एक विभाग की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि जीवन के प्रति सामूहिक जवाबदेही है। प्राचार्य डॉ. पूनम शुक्ला, उप प्राचार्य डॉ. प्रियंका त्रिपाठी और नर्सिंग विभाग के प्रधानाचार्य प्रकाश सिंह चौधरी ने भी छात्राओं को नियमों को व्यवहार में उतारने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में डॉ. सीमा श्रीवास्तव, डॉ. सुषमा मिश्रा सहित बड़ी संख्या में शिक्षक और छात्राएं मौजूद रहीं। अंत में छात्राओं ने यातायात नियमों का पालन करने का संकल्प लिया।



# एसआईआर की प्रक्रिया और विद्यार्थियों की पढ़ाई



डॉ. विजय गर्ग

SIR प्रक्रिया विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण सीख भी बन सकती है। लोकतंत्र केवल मतदान करने तक सीमित नहीं है। सही रिकॉर्ड रखना, संवैधानिक जिम्मेदारियों को समझना और नागरिक जीवन में जिम्मेदारीपूर्वक भाग लेना भी लोकतंत्र का महत्वपूर्ण हिस्सा है। विद्यार्थियों को उनकी उम्र के अनुसार नागरिकता, चुनाव, दस्तावेजों और लोकतांत्रिक संस्थाओं के महत्व के बारे में जानकारी दी जा सकती है।

एसआईआर की प्रक्रिया मतदाता सूचियों को सही, अद्यतन और विश्वसनीय बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक अभ्यास है। लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत करने के लिए ऐसी प्रक्रिया आवश्यक है, लेकिन इसके साथ यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि इसका विद्यार्थियों, शिक्षकों और शिक्षण संस्थानों की नियमित गतिविधियों पर अनावश्यक प्रभाव न पड़े।

विद्यार्थियों के लिए शिक्षा एक निरंतर प्रक्रिया है। नियमित उपस्थिति, कक्षा में अध्ययन, परीक्षाएँ, असाइनमेंट, प्रायोगिक कार्य और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए एकाग्रता और स्थिरता आवश्यक है। विद्यार्थियों की दिनचर्या में लंबे समय तक होने वाला व्यवधान उनकी शैक्षणिक प्रगति को प्रभावित कर सकता है, विशेषकर बोर्ड परीक्षाओं और प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों को।

एसआईआर प्रक्रिया के दौरान नागरिकों को दस्तावेज उपलब्ध कराने या उनका सत्यापन कराने, फॉर्म भरने, मतदाता संबंधी विवरणों की जाँच करने और अधिकारियों से संपर्क करने की आवश्यकता पड़ सकती है। कई परिवारों में विद्यार्थी अपने माता-पिता या बुजुर्गों को फॉर्म समझने, जानकारी जुटाने अथवा ऑनलाइन प्रक्रिया पूरी करने में सहायता कर सकते हैं। इससे उनमें नागरिक जिम्मेदारी की भावना विकसित हो सकती है, लेकिन यह सहायता उनकी पढ़ाई की कीमत पर नहीं होनी चाहिए।

ऐसी प्रशासनिक प्रक्रियाओं के दौरान स्कूलों और शिक्षकों पर भी अतिरिक्त जिम्मेदारियाँ आ सकती हैं। यदि शिक्षकों को सत्यापन, दस्तावेजों का कार्य या फील्ड इयूटी से संबंधित कार्य सौंपे जाते हैं, तो उनकी नियमित शैक्षणिक जिम्मेदारियाँ प्रभावित हो सकती हैं। शिक्षकों को पहले से ही पाठ-योजना, अध्यापन, मूल्यांकन, परीक्षाओं और विद्यार्थियों के मार्गदर्शन जैसे अनेक कार्य करने होते हैं। इसलिए प्रशासनिक इयूटी की योजना इस



प्रकार बनाई जानी चाहिए कि शैक्षणिक गतिविधियाँ न्यूनतम प्रभावित हों।

SIR प्रक्रिया विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण सीख भी बन सकती है। लोकतंत्र केवल मतदान करने तक सीमित नहीं है। सही रिकॉर्ड रखना, संवैधानिक जिम्मेदारियों को समझना और नागरिक जीवन में जिम्मेदारीपूर्वक भाग लेना भी लोकतंत्र का महत्वपूर्ण हिस्सा है। विद्यार्थियों को उनकी उम्र के अनुसार नागरिकता, चुनाव, दस्तावेजों और लोकतांत्रिक संस्थाओं के महत्व के बारे में जानकारी दी जा सकती है।

इसके साथ प्रशासनिक दक्षता और शिक्षा की निरंतरता साथ-साथ चलनी चाहिए। जहाँ संभव हो, परिवारों से संबंधित सत्यापन गतिविधियों को स्कूल के महत्वपूर्ण समय के बाहर निर्धारित किया जाना चाहिए। डिजिटल सुविधाओं को भी मजबूत किया जाना चाहिए, ताकि नागरिकों को बार-बार कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें। सरल भाषा में स्पष्ट निर्देश भ्रम को कम कर सकते हैं और लोगों का बहुमूल्य समय बचा सकते हैं।

ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से संबंधित

विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। ऐसे परिवारों के पास डिजिटल उपकरणों, इंटरनेट या दस्तावेजी सहायता की पर्याप्त सुविधा नहीं हो सकती। यदि एसआईआर प्रक्रिया में ऑनलाइन कार्यवाही आवश्यक है, तो स्कूलों और स्थानीय प्रशासन द्वारा उचित मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जा सकता है। लेकिन विद्यार्थियों को सरकारी कार्य पूरा करने की जिम्मेदारी नहीं दी जानी चाहिए।

शैक्षणिक कैलेंडर का भी विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। बोर्ड परीक्षाएँ, प्रवेश परीक्षाएँ, प्रायोगिक परीक्षाएँ और छात्रवृत्ति परीक्षाएँ विद्यार्थी जीवन के महत्वपूर्ण चरण हैं। इसलिए प्रशासनिक कार्यक्रमों का समन्वय इस प्रकार होना चाहिए कि विद्यार्थियों का महत्वपूर्ण अध्ययन समय नष्ट न हो।

बड़ा सिद्धांत बिल्कुल स्पष्ट है—लोकतांत्रिक प्रशासन और शिक्षा को एक-दूसरे का सहयोगी बनना चाहिए, प्रतिस्पर्धी नहीं। एक सुव्यवस्थित एस आई आर प्रक्रिया चुनावी रिकॉर्ड को मजबूत कर सकती है, जबकि सुरक्षित और व्यवस्थित शैक्षणिक वातावरण विद्यार्थियों के भविष्य की रक्षा करता है।

विद्यार्थियों को अपनी नागरिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए, लेकिन विद्यालयी जीवन में उनकी प्राथमिक जिम्मेदारी सीखना और शिक्षा प्राप्त करना है। अभिभावकों को आवश्यक दस्तावेजी कार्य जिम्मेदारी से पूरा करना चाहिए, शिक्षकों को अधिक से अधिक समय अध्यापन के लिए मिलना चाहिए और प्रशासन को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ऐसी प्रक्रियाएँ कुशलता से पूरी हों।

एक मजबूत लोकतंत्र को जागरूक नागरिकों की आवश्यकता होती है और जागरूक नागरिक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से तैयार होते हैं। इसलिए SIR प्रक्रिया चुनावी रिकॉर्ड की शुद्धता के लिए आवश्यक हो सकती है, लेकिन आने वाली पीढ़ी की शिक्षा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। प्रशासनिक कार्य उचित योजना से पूरा किया जा सकता है, लेकिन खोया हुआ पढ़ाई का समय वापस पाना कठिन होता है। सबसे अच्छी व्यवस्था वही है जो लोकतांत्रिक जिम्मेदारी के साथ हर बच्चे के शिक्षा के अधिकार की भी रक्षा करे।

सेवानिवृत्त प्राचार्य। शिक्षाविद्। Eminent Mathematician स्ट्रीट कौर चंद, मलोट, पंजाब



## संपादकीय

### चिंतन-मनन

## बैलेट पेपर से ईवीएम मशीन तक सवाल चुनाव पर नहीं, लोकतंत्र के विश्वास पर।



लेखक डॉ. विक्रम चौरसिया, परिवहन विशेष समाचार पत्र

भारत में चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का माध्यम नहीं, बल्कि जनता के विश्वास की संवैधानिक अभिव्यक्ति है। इसलिए चुनावी व्यवस्था से जुड़ा प्रत्येक प्रश्न लोकतंत्र की विश्वसनीयता से जुड़ जाता है। (कभी बैलेट पेपर, फिर ईवीएम मशीन, और अब मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण को लेकर देश में बहस है। विभिन्न राजनीतिक दल अपनी चिंताएँ सामने रख रहे हैं और निर्वाचन प्रक्रिया की पारदर्शिता पर चर्चा हो रही है लेकिन लोकतांत्रिक मर्यादा यही कहती है आरोप को प्रमाण नहीं माना जा सकता और किसी पक्ष का बचाव भी अंतिम सत्य नहीं होता। सच्चाई का निर्धारण तथ्यों, प्रमाणों और कानून की कसौटी पर होना चाहिए। आज सबसे बड़ा प्रश्न किसी व्यक्ति या दल का नहीं, उस सामान्य नागरिक के भरोसे का है जो अपना मत

देकर लोकतंत्र को शक्ति देता है। क्या प्रत्येक योग्य मतदाता का नाम सुरक्षित है? क्या नाम हटाने से पहले उचित अवसर दिया जाता है? क्या पूरी प्रक्रिया इतनी स्पष्ट है कि नागरिक उसके परिणाम को सहज मन से स्वीकार कर सके? यदि कहीं संदेह है, तो उसका समाधान पारदर्शिता से होना चाहिए। सवालों का उत्तर देना किसी संवैधानिक संस्था को कमजोर नहीं करता बल्कि उसकी प्रतिष्ठा को मजबूत करता है। निर्वाचन आयोग की स्वतंत्रता आवश्यक है, लेकिन उसके साथ जवाबदेही, निष्पक्षता और जनविश्वास भी अनिवार्य हैं। राजनीतिक दलों को अपनी असहमति लोकतांत्रिक मर्यादा में व्यक्त करनी चाहिए। मीडिया को आरोप और प्रमाण के बीच अंतर बनाए रखना चाहिए। न्यायपालिका के समक्ष उठे विषयों का निर्णय संविधान और कानून के अनुरूप होना चाहिए। और नागरिक को बिना भय प्रश्न पूछने का अधिकार मिलना

चाहिए। हमें किसी व्यक्ति या दल के पक्ष-विपक्ष में नहीं, मतदाता के अधिकार, संविधान और लोकतांत्रिक संस्थाओं की गरिमा के साथ खड़ा होना चाहिए। क्योंकि सरकारें बदलती हैं, राजनीतिक समीकरण बदलते हैं, पदाधिकारी बदलते हैं लेकिन राष्ट्र और उसकी संवैधानिक व्यवस्था बनी रहती है। इसलिए राष्ट्र सर्वोपरि। मानवता सर्वोपरि। संविधान सर्वोपरि। और जनता का विश्वास सर्वोपरि। लोकतंत्र में चुनावी परिणाम किसी दल की जीत या हार हो सकते हैं, लेकिन जनता के भरोसे में दूर पर राष्ट्र के लिए चिंता का विषय है। इसलिए हमारा उद्देश्य किसी व्यक्ति को दोषी ठहराना नहीं, बल्कि ऐसी चुनावी व्यवस्था सुनिश्चित करना होना चाहिए जिस पर हर भारतीय निश्चित होकर विश्वास कर सके। यही लोकतंत्र की शक्ति है। यही संविधान की मर्यादा है।

# बुजुर्गों का अनुभव, युवाओं की नई उड़ान

डॉ. विजय गर्ग

हर पीढ़ी को लगता है कि वह एक बिल्कुल नई दुनिया में जी रही है। तकनीक बदलती है, जीवनशैली बदलती है, रोजगार के तरीके बदलते हैं और सामाजिक संबंधों का स्वरूप भी बदलता है। आज के युवा स्मार्टफोन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सोशल मीडिया और तुरंत उपलब्ध जानकारी के बीच बड़े हो रहे हैं। वे दुनिया से पहले की किसी भी पीढ़ी की तुलना में अधिक तेजी से जुड़ सकते हैं। फिर भी, इन तेज बदलावों के बीच ज्ञान और अनुभव का एक ऐसा स्रोत आज भी अत्यंत मूल्यवान है—बुजुर्गों का अनुभव। बुजुर्ग केवल वे लोग नहीं हैं जिन्होंने अधिक वर्ष जीवन जिया है। वे संघर्षों, गलतियों, उपलब्धियों, रिश्तों और जीवन के उतार-चढ़ाव से सीखे अनुभवों की जीवित पुस्तकें हैं। उनका ज्ञान हमेशा पाठ्यपुस्तकों या इंटरनेट पर उपलब्ध नहीं होता, लेकिन उसमें वह व्यावहारिक समझ होती है जिसे केवल जानकारी से हासिल करना कठिन है।

अनुभव एक शक्तिशाली शिक्षक है शिक्षा हमें जानकारी देती है, लेकिन अनुभव सिखाता है कि उस जानकारी का उपयोग कैसे किया जाए। बुजुर्गों ने आर्थिक कठिनाइयों, परिवारिक जिम्मेदारियों, पेशेवर चुनौतियों, सामाजिक बदलावों और व्यक्तिगत संघर्षों का सामना किया होता है। ऐसे अनुभव अक्सर उनमें धैर्य, समझदारी और परिस्थितियों से उबरने की क्षमता विकसित करते हैं।

एक युवा व्यक्ति कुछ ही मिनटों में कोई नया मोबाइल ऐप सीख सकता है, लेकिन एक बुजुर्ग व्यक्ति अपने अनुभव से बता सकता है कि निराशा से कैसे निपटना है, पारिवारिक मतभेद कैसे सुलझाने हैं, सीमित संसाधनों का सही उपयोग कैसे करना है और कठिन समय में शांत कैसे रहना है। दोनों प्रकार का ज्ञान महत्वपूर्ण है। आदर्श समाज वह नहीं है जिसमें नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी का स्थान ले ले। आदर्श समाज वह है जिसमें अनुभव और नवीनता मिलकर आगे बढ़ें।

कहानियों से जीवन के सबक जीवन के अनेक महत्वपूर्ण सबक कहानियों के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ते हैं। दादा-दादी और नाना-नानी अक्सर बच्चों को अपने बचपन, गांव, शिक्षा, खेती, त्योहारों, संघर्षों और रिश्तों से जुड़ी बातें बताते हैं। बच्चों को ये बातें शुरुआत में केवल कहानियां लग सकती हैं, लेकिन

इनके भीतर ईमानदारी, धैर्य, मेहनत, साहस, सहयोग और कृतज्ञता जैसे जीवन-मूल्य छिपे होते हैं।

कई किलोमीटर पैदल स्कूल जाने की कहानी शिक्षा का महत्व समझा सकती है। कठिन आर्थिक परिस्थितियों से गुजरने की कहानी बचत और संयम सिखा सकती है। पड़ोसियों की मदद करने की कहानी समुदाय और सहयोग का महत्व बता सकती है।

ऐसी कहानियां युवा पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ती हैं।

तकनीक जोड़ सकती है, अनुभव दिशा दे सकता है।

इंटरनेट हमें बहुत बड़ी मात्रा में जानकारी उपलब्ध कराता है। युवा कुछ ही सेकंड में लगभग किसी भी विषय पर जानकारी खोज सकते हैं।

लेकिन जानकारी और ज्ञान में अंतर है, और ज्ञान तथा अनुभव में भी।

इंटरनेट हमें बता सकता है कि क्या हुआ, लेकिन अनुभव हमें यह समझने में मदद कर सकता है कि ऐसा क्यों हुआ और उससे हमें क्या सीखना चाहिए।

कोई युवा उद्यमी व्यवसाय शुरू करने के बारे में सैकड़ों ऑनलाइन वीडियो देख सकता है, लेकिन ऐसा व्यक्ति जिसने स्वयं व्यवसाय में सफलता और असफलता दोनों देखी हों, वह ऐसी व्यावहारिक सलाह दे सकता है जिसे केवल स्क्रीन से सीखना कठिन है।

तकनीक हमें गति देती है, जबकि अनुभव हमें दृष्टिकोण देता है।

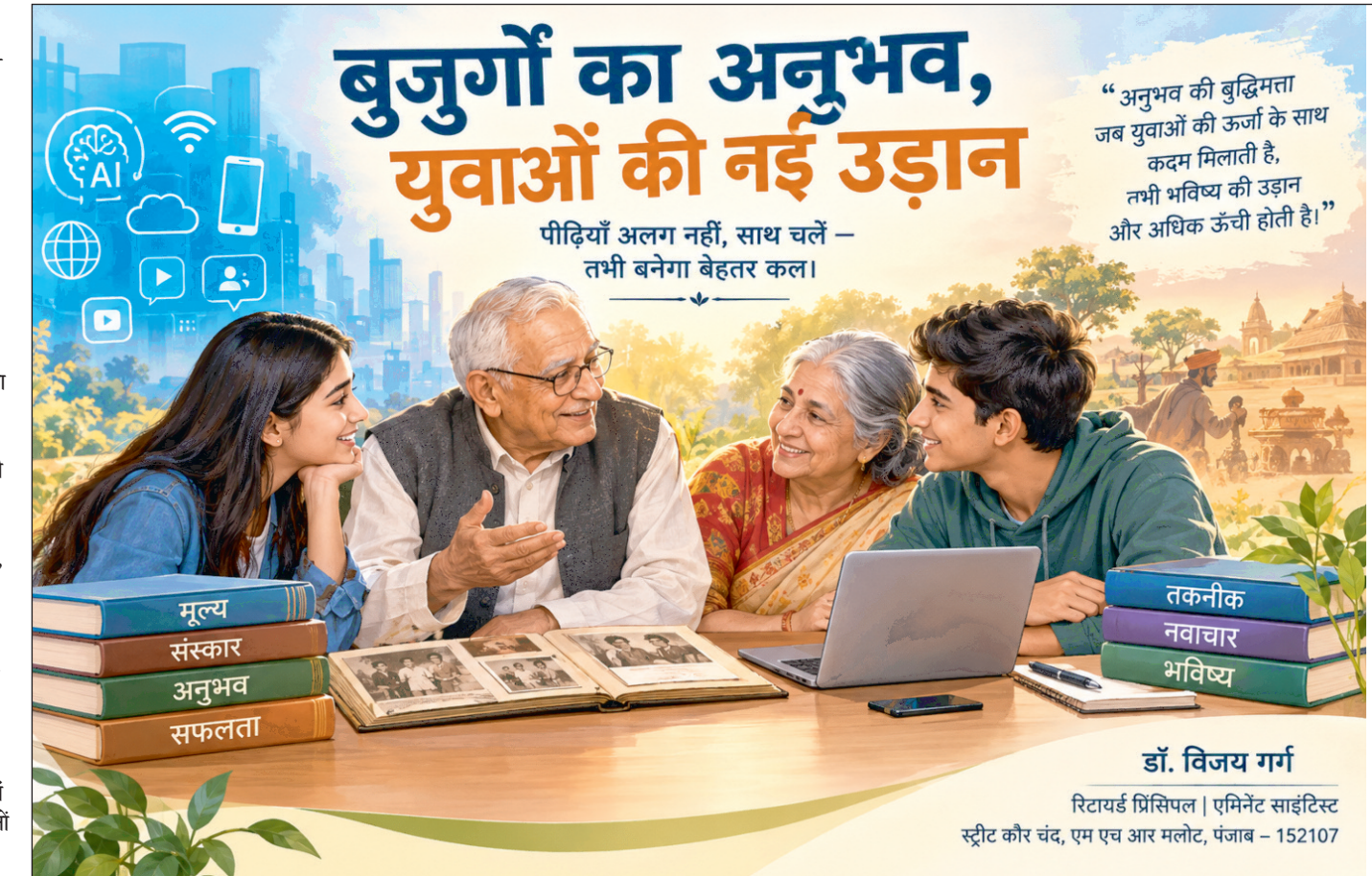
पीढ़ियों के बीच संवाद आवश्यक युवा और बुजुर्गों के बीच नियमित संवाद होना चाहिए।

परिवारों में दादा-दादी और पोते-पोतियों को बातचीत के अवसर दिए जा सकते हैं। स्कूल वरिष्ठ नागरिकों को विद्यार्थियों से अपने अनुभव साझा करने के लिए आमंत्रित कर सकते हैं। सामाजिक संस्थाएँ ऐसे कार्यक्रम आयोजित कर सकती हैं, जहां युवा स्थानीय इतिहास, पारंपरिक कौशल, हस्तशिल्प, कृषि और सामाजिक मूल्यों के बारे में बुजुर्गों से सीखें।

इस प्रकार के संवाद से दोनों पीढ़ियों को लाभ होता है।

युवा अनुभव और ऐतिहासिक दृष्टिकोण प्राप्त करते हैं, जबकि बुजुर्गों को सम्मान, अपनापन और बदलती दुनिया से जुड़े रहने का अवसर मिलता है।

युवाओं से भी बहुत कुछ सीख सकते हैं बुजुर्ग बुजुर्गों का सम्मान करने का अर्थ यह नहीं है कि पुरानी पीढ़ी हमेशा सही होती है।



हर पीढ़ी को अपनी खूबियां और सीमाएँ होती हैं। युवा आधुनिक तकनीक, डिजिटल संचार, नए करियर विकल्पों, पर्यावरणीय चुनौतियों और बदलती सामाजिक परिस्थितियों को बेहतर ढंग से समझते हैं। वे बुजुर्गों को डिजिटल बैंकिंग, स्मार्टफोन, ऑनलाइन सेवाओं, टेलीमैडिसिन और अन्य तकनीकों का उपयोग करना सिखा सकते हैं। इसलिए पीढ़ियों के बीच सीखने की प्रक्रिया दोतरफा होनी चाहिए। बुजुर्ग अनुभव साझा करें और युवा नई जानकारी तथा तकनीक को शौशल साझा करें। इससे पीढ़ियों के बीच दूरी कम होगी और साझेदारी की भावना मजबूत होगी। युवा अनुभवों से सीखना अनुभवी लोगों की बात सुनने का एक बड़ा लाभ यह है कि हम उनकी गलतियों से सीख सकते हैं। युवाओं को हर वह गलती दोहराने की आवश्यकता नहीं है जो पिछली पीढ़ियों ने की है। किसी आर्थिक नुकसान से गुजर चुके

## बुजुर्गों का अनुभव, युवाओं की नई उड़ान

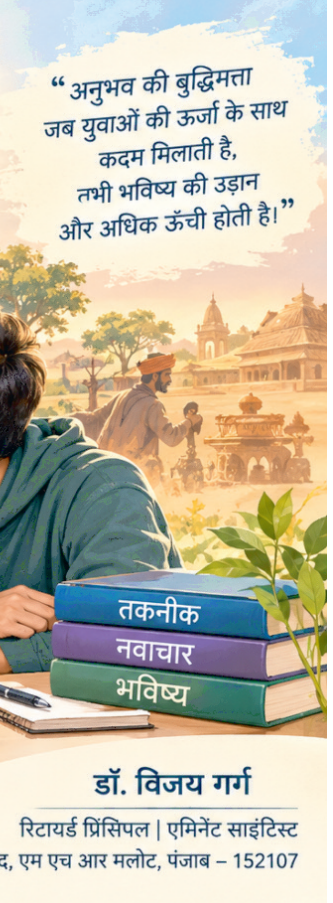
पीढ़ियाँ अलग नहीं, साथ चलें – तभी बनेगा बेहतर कल।

↓



बुजुर्ग बचत का महत्व समझा सकते हैं। पेशेवर असफलता का सामना कर चुके व्यक्ति धैर्य और निरंतर सीखने की आवश्यकता बता सकते हैं। रिश्तों में कठिनाइयां देख चुके लोग संवाद, समझ और सम्मान का महत्व समझा सकते हैं। अनुभव हर गलती को रोक नहीं सकता, लेकिन अनावश्यक गलतियों से बचने में मदद जरूर कर सकता है। वे मूल्य जिन्हें तकनीक नहीं बदल सकती दुनिया तेजी से डिजिटल हो रही है, लेकिन कुछ मानवीय मूल्य कभी पुराने नहीं होते। ईमानदारी, दया, जिम्मेदारी, अनुशासन, करुणा, सम्मान और दृढ़ता हमेशा महत्वपूर्ण रहेंगे। युवा तकनीक में कितने ही कुशल क्यों न हों, उनकी सफलता अंततः इस बात पर निर्भर करेगी कि वे अपनी क्षमता का उपयोग किस प्रकार करते हैं। बिना नैतिकता के बुद्धिमत्ता तकनीक का गलत इस्तेमाल कर सकती है। बिना संवेदनशीलता के अत्यधिक कुशल व्यक्ति भी सार्थक संबंध बनाने में कठिनाई महसूस

कर सकता है। इन मानवीय मूल्यों को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने में बुजुर्गों की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण बुजुर्ग हमारी सांस्कृतिक स्मृति के भी महत्वपूर्ण बाहक हैं। भाषाएँ, लोकगीत, पारंपरिक व्यंजन, स्थानीय रीति-रिवाज, ऐतिहासिक कहानियाँ, हस्तशिल्प और सामुदायिक परंपराएँ अक्सर पीढ़ी-दर-पीढ़ी बुजुर्गों के माध्यम से आगे बढ़ती हैं। आधुनिक जीवनशैली के तेजी से वैश्विक होने के कारण कई परंपराएँ धीरे-धीरे समाप्त हो रही हैं। बुजुर्गों से बातचीत युवा पीढ़ी को यह समझने में मदद कर सकती है कि उनके परिवार और समाज की जड़ें कहाँ हैं। संस्कृति को बचाने का अर्थ आधुनिकता को नकारना नहीं है। इसका अर्थ है अतीत की मूल्यवान बातों को भविष्य तक पहुंचाते हुए सकारात्मक बदलाव के लिए खुले रहना। स्कूलों की भूमिका स्कूल पीढ़ियों को जोड़ने में महत्वपूर्ण



भूमिका निभा सकते हैं। विद्यार्थियों को अपने दादा-दादी या किसी वरिष्ठ नागरिक का साक्षात्कार लेने के लिए कहा जा सकता है। वे उनके बचपन, शिक्षा, व्यवसाय और सामाजिक जीवन के बारे में जानकारी एकत्र कर सकते हैं। ऐसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों के संचार कौशल को विकसित करने के साथ यह भी सिखाती हैं कि शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं है। जब किताबों का ज्ञान जीवन के अनुभव से मिलता है, तो कक्षा और अधिक समृद्ध हो जाती है। अधिक संवेदनशील समाज की ओर जो समाज अपने बुजुर्गों का सम्मान करता है, वहां पीढ़ियों के बीच मजबूत संबंध विकसित होने की संभावना अधिक होती है। दुर्भाग्य से शहरीकरण, व्यस्त जीवनशैली और रोजगार या शिक्षा के लिए पलायन के कारण कई बुजुर्ग अकेलेपन का अनुभव करते हैं। युवा उनके पास रहते हुए भी काम, पढ़ाई और डिजिटल व्यस्तताओं

के कारण भावनात्मक रूप से दूर हो सकते हैं। नियमित बातचीत, साथ बैठकर भोजन करना, पारिवारिक गतिविधियों में शामिल करना और थोड़ा समय देना बहुत बड़ा अंतर पैदा कर सकता है। बुजुर्गों को हमेशा महंगे उपहारों की आवश्यकता नहीं होती। अक्सर वे समय, सम्मान और साथ को अधिक महत्व देते हैं। भविष्य मिलकर बनाना होगा भविष्य युवाओं का है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि वह अतीत से पूरी तरह कट जाए। सफल समाज इतिहास से सीखते हैं और साथ ही नवाचार को अपनाते हैं। वे अनुभव की बुद्धिमत्ता को युवाओं की ऊर्जा के साथ जोड़ते हैं। युवाओं को बड़े सपने देखने, नए प्रयोग करने और तकनीक का रचनात्मक उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। साथ ही उन्हें उन लोगों के जीवन-अनुभवों से सीखने के लिए भी तैयार रहना चाहिए, जिन्होंने उनसे लंबी जीवन-यात्रा तय की है। मुद्दा पुराने और नए में से किसी एक को चुनने का नहीं है। वास्तविक आवश्यकता दोनों को साथ लेकर चलने की है। निष्कर्ष नई पीढ़ी के सामने आज असाधारण अवसर हैं। उसके पास ज्ञान, तकनीक और वैश्विक संचार के ऐसे साधन हैं, जिनकी कल्पना पिछली पीढ़ियां नहीं कर सकती थीं। लेकिन अवसर तभी सार्थक होते हैं, जब उनके साथ अनुभव, मूल्य और सही निर्णय लेने की क्षमता भी हो। बुजुर्गों के पास ऐसे जीवन-पाठ हैं जिन्हें हमेशा डाउनलोड, संचय या कृत्रिम बुद्धिमत्ता से प्राप्त नहीं किया जा सकता। उनके अनुभव दूसरे समय के जीवंत दस्तावेज हैं और वे युवा पीढ़ी को अनिश्चित भविष्य की राह समझने में मदद कर सकते हैं। युवा ऊर्जा, नवाचार और नए विचार दे सकते हैं। बुजुर्ग धैर्य, दृष्टिकोण और अनुभव दे सकते हैं। जब ये दोनों शक्तियाँ एक साथ आती हैं, तो पीढ़ियाँ एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा नहीं करती—एक-दूसरे को मजबूत बनाती हैं। अनुभव की बुद्धिमत्ता जब युवाओं की ऊर्जा के साथ कदम मिलती है, तभी भविष्य की उड़ान और अधिक ऊँची होती है।

डॉ. विजय गर्ग रिटायर्ड प्रिंसिपल। एमिनेंट साइंटिस्ट स्ट्रीट कौर चंद, एम एच आर मलोट,





लेखक--- संजय अग्रवाल,  
परिवहन विशेष समाचार पत्र  
जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल

डिजिटल अर्थव्यवस्था आज के समय में आर्थिक गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण और अपरिहार्य हिस्सा बन चुकी है। यह न केवल समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती है, बल्कि देश की आर्थिक संरचना में भी व्यापक परिवर्तन ला रही है। डिजिटल अर्थव्यवस्था का जीडीपी ( सकल घरेलू उत्पाद ) पर गहरा प्रभाव पड़ा है और यह प्रभाव समय के साथ और अधिक मजबूत होता जा रहा है। डिजिटल तकनीक, इंटरनेट, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा एनालिटिक्स, और ई-कॉमर्स जैसी उन्नत तकनीकों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में व्यापार और विकास के नए अवसर पैदा किए हैं। डिजिटल अर्थव्यवस्था ने उत्पादन और व्यापार के पारंपरिक तरीकों को पूरी तरह से बदल दिया है। अब उत्पाद और सेवाएं डिजिटल

माध्यमों के द्वारा अधिक तेज़, सटीक और किफायती ढंग से उपभोक्ताओं तक पहुंचाई जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म जैसे कि अमेज़न और फ्लिपकार्ट ने खुदरा व्यापार के स्वरूप को बदल दिया है। इन प्लेटफॉर्मों ने न केवल छोटे और मध्यम उद्यमों को वैश्विक बाजार तक पहुंचने का अवसर दिया है, बल्कि उपभोक्ताओं को भी कम लागत पर अधिक विकल्प उपलब्ध कराए हैं। इसके परिणामस्वरूप जीडीपी में व्यापार और सेवा क्षेत्र का योगदान बढ़ा है। डिजिटल भुगतान प्रणाली का उदय डिजिटल अर्थव्यवस्था का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। यूपीआई, पेटीएम, गूगल पे और अन्य डिजिटल वॉलेट्स ने नकदी आधारित लेनदेन को डिजिटल रूप में परिवर्तित कर दिया है। इससे न केवल लेनदेन में पारदर्शिता बढ़ी है, बल्कि कर संग्रहण प्रणाली में भी सुधार हुआ है। डिजिटल भुगतान प्रणाली ने औपचारिक अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित किया है, जिससे जीडीपी की गणना में शामिल होने वाली आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि हुई है। डिजिटल तकनीकों ने उत्पादन की प्रक्रिया को भी अधिक प्रभावी बनाया है। मशीन लर्निंग और ऑटोमेशन ने उत्पादन में दक्षता और

उत्पादकता को बढ़ाया है। कृषि, निर्माण, और सेवा क्षेत्रों में नई तकनीकों के उपयोग से उत्पादन लागत में कमी आई है और उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। उदाहरण के लिए, भारत में स्मार्ट खेती ( Precision Farming ) के उपयोग से किसानों को बेहतर उपज प्राप्त हो रही है, जिससे कृषि क्षेत्र का जीडीपी में योगदान बढ़ा है। डिजिटल शिक्षा और कौशल विकास भी जीडीपी पर सकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं। ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म जैसे बायजूस, अनअकेडमी और कोसेरा ने लोगों को डिजिटल माध्यम से शिक्षा और कौशल प्राप्त करने का अवसर दिया है। इससे न केवल युवाओं को रोजगार के नए अवसर मिल रहे हैं, बल्कि श्रम शक्ति में दक्षता भी बढ़ रही है। एक कुशल श्रम शक्ति अर्थव्यवस्था की उत्पादकता को बढ़ाने में सहायक होती है। हालांकि, डिजिटल अर्थव्यवस्था के विकास से चुनौतियां भी उत्पन्न हुई हैं। साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता, और डिजिटल डिवाइड ( Digital Divide ) जैसे मुद्दे समाज और अर्थव्यवस्था के लिए बाधा बन सकते हैं। उदाहरण के लिए, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच डिजिटल विभाजन डिजिटल अर्थव्यवस्था के

लाभों को समान रूप से वितरित करने में कठिनाई उत्पन्न करता है। यदि इस डिजिटल डिवाइड को कम किया जाए, तो डिजिटल अर्थव्यवस्था का जीडीपी पर और अधिक सकारात्मक प्रभाव देखा जा सकता है। सरकार ने भी डिजिटल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कदम उठाए हैं। 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम के तहत देश के ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों को इंटरनेट कनेक्टिविटी से जोड़ा गया

है। इसके साथ ही, स्टार्टअप्स और इनोवेशन को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न योजनाएं लागू की गई हैं। इन प्रयासों से भारत एक मजबूत डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर हो रहा है, जो आने वाले समय में जीडीपी को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में सक्षम होगी। इसके अतिरिक्त, डिजिटल अर्थव्यवस्था ने वैश्विक व्यापार को भी बढ़ावा दिया है। आज भारतीय कंपनियां डिजिटल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से

अपने उत्पादों और सेवाओं को दुनिया भर में निर्यात कर रही हैं। इससे भारत का विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ा है और जीडीपी में निर्यात क्षेत्र का योगदान बढ़ा है। डिजिटल अर्थव्यवस्था का एक और महत्वपूर्ण पहलू है डेटा एनालिटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस। इन तकनीकों का उपयोग कंपनियां अपने व्यापारिक निर्णयों को बेहतर बनाने और उपभोक्ता मांग को समझने के लिए

कर रही हैं। बेहतर निर्णय लेने और उपभोक्ताओं की जरूरतों को सटीक तरीके से पूरा करने से कंपनियों की आय और मुनाफे में वृद्धि होती है, जिसका सकारात्मक प्रभाव राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। डिजिटल अर्थव्यवस्था ने आर्थिक विकास और जीडीपी वृद्धि में अभूतपूर्व योगदान दिया है। यह न केवल व्यापार और सेवाओं को अधिक प्रभावी और उत्पादक बना रही है, बल्कि समाज के विभिन्न

वर्गों को नई संभावनाओं और अवसरों से भी जोड़ रही है। हालांकि, इस क्षेत्र में और अधिक सुधार और समावेशी विकास की आवश्यकता है ताकि इसके लाभ पूरे समाज तक पहुंच सकें। सरकार और निजी क्षेत्र के संयुक्त प्रयासों से डिजिटल अर्थव्यवस्था को और अधिक सशक्त बनाया जा सकता है, जिससे भारत की जीडीपी में उल्लेखनीय वृद्धि सुनिश्चित हो सके।



# हिमाचल वेलफेयर एसोसिएशन फरीदाबाद का वार्षिक समारोह धूमधाम से सम्पन्न - लोक सभा सांसद अनुराग सिंह ठाकुर का भव्य स्वागत

हिमाचल वेलफेयर एसोसिएशन फरीदाबाद का वार्षिक समारोह धूमधाम से सम्पन्न - लोक सभा सांसद अनुराग सिंह ठाकुर का भव्य स्वागत हरियाणा के कैबिनेट मंत्री विपुल गोयल, फरीदाबाद के उपायुक्त आयुष सिन्हा, बड़खल विधायक धनेश अधलखा सहित नगर निगम पार्षदों की गरिमामयी उपस्थिति - रंगारंग हिमाचली सांस्कृतिक कार्यक्रम और पारम्परिक हिमाचली धाम का आयोजन

फरीदाबाद। रिपोर्ट: डॉ. जी.एल. महाजन, पीएचडी, परिवहन विशेष समाचार पत्र

हिमाचल वेलफेयर एसोसिएशन फरीदाबाद का वार्षिक समारोह इस वर्ष अत्यंत हर्षोल्लास और हिमाचली संस्कृति की छटा के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में लोक सभा सांसद श्री अनुराग सिंह ठाकुर पधारे।

**स्वागत और मुख्य बिंदु:**  
1. स्वागत समारोह: एसोसिएशन के चेयरमैन श्री सतपाल राणा और अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम दास शर्मा ने मुख्य अतिथि सांसद श्री अनुराग सिंह ठाकुर का पारम्परिक हिमाचली टोपी पहनाकर और शॉल भेंट कर स्वागत किया। मंच पर हिमाचली संस्कृति की झलक साफ दिखाई दी।



2. विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति: इस अवसर पर हरियाणा सरकार के कैबिनेट मंत्री श्री विपुल गोयल, फरीदाबाद के उपायुक्त श्री आयुष सिन्हा, बड़खल के विधायक श्री धनेश अधलखा तथा फरीदाबाद नगर निगम के अनेक पार्षदों ने हिस्सा

लेकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।  
3. सांस्कृतिक कार्यक्रम: समारोह में रंगारंग हिमाचली सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें हिमाचल के लोक नृत्य, लोक गीत और पहाड़ी परम्परा की प्रस्तुति ने सभी का मन मोह

लिया।  
4. हिमाचली धाम: कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों और सदस्यों के लिए पारम्परिक हिमाचली धाम परोसी गई, जिसने फरीदाबाद में बसे हिमाचली समुदाय को अपने घर की याद ताजा करा दी।  
**संपादकीय टिप्पणी:**  
फरीदाबाद में हिमाचली समाज का यह संगठन न केवल सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है, बल्कि सामाजिक कल्याण और भाईचारे का उत्तम उदाहरण भी है। इस प्रकार के आयोजन प्रवासी समुदाय को अपनी जड़ों से जोड़े रखते हैं।  
http://www.newsparivahan.com  
editor@newsparivahan.com

## हिंदी के प्रचार-प्रसार का संकल्प, 29वीं वाहिनी एसएसबी में हिंदी पखवाड़ा संपन्न

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र गयामी

29वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल, गया परिसर में सोमवार को कमांडेंट श्री कुणाल की अध्यक्षता में हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह आयोजित किया गया। पखवाड़े के दौरान हिंदी भाषा के विकास एवं प्रचार-प्रसार को लेकर विभिन्न कार्यक्रम, कार्यशालाएं, प्रतियोगिताएं और प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई। गेस्ट फैकल्टी द्वारा बहुभाषी अनुवाद सारथी, बोलो-लोखो एवं लीला एप्लीकेशन के उपयोग पर प्रशिक्षण तथा हिंदी की प्रगति और कार्यालयी कार्यप्रणाली पर व्याख्यान दिया गया। समापन समारोह में कमांडेंट ने



कहा कि हिंदी केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत और भावनात्मक एकता की महत्वपूर्ण कड़ी है। उन्होंने सभी कार्मिकों से दैनिक एवं कार्यालयी कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने का आह्वान किया। इस दौरान अंग्रेजी-

हिंदी शब्दकोश, निबंध, वाद-विवाद तथा टिप्पणी एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण-पत्र एवं प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में अधिकारी, अधीनस्थ अधिकारी एवं बल कार्मिक उपस्थित रहे।

## नवादा विधि महाविद्यालय में शुरू हो विधि स्नातकोत्तर की पढ़ाई, छात्रों ने राज्यपाल से मांगी अनुमति

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र गयामी

मगध विश्वविद्यालय, बोधगया के अंतर्गत संचालित नवादा विधि महाविद्यालय में विधि स्नातकोत्तर की पढ़ाई शुरू कराने की मांग उठी है। विधि छात्रों ने बिहार के राज्यपाल से जल्द अनुमति देने का आग्रह किया है। छात्रों के अनुसार, महाविद्यालय को भारतीय विधिज्ञ परिषद से आवश्यक मान्यता मिल चुकी है और मगध विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा दो वर्ष पूर्व पाठ्यक्रम शुरू करने का आदेश भी दिया जा चुका है। अब केवल राजभवन की अनुमति शेष है। छात्रों का कहना है कि यहां विधि स्नातकोत्तर की पढ़ाई शुरू होने से मगध प्रमंडल के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए दूसरे शहरों में नहीं जाना पड़ेगा। इससे समय और आर्थिक संसाधनों की बचत होगी। अधिवक्ता डॉ. मनोष पंकर मिश्रा और राजेंद्र प्रसाद ने राज्यपाल से शीघ्र अनुमति देने की अपील की। महाविद्यालय के 22 छात्र और 7 शिक्षक दिल्ली में होने वाले 52वें वार्षिक विधि सम्मेलन में भी भाग लेंगे।



## अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा दिवस पर ‘टीचर्स ऑफ बिहार’ की त्रैमासिक ई-पत्रिका ‘प्रज्ञानिका’ के नए अंक का भव्य प्रकाशन

रिपोर्ट केशव कुमार, परिवहन विशेष समाचार पत्र बिहार

अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के शुभ अवसर पर बिहार के शिक्षकों द्वारा संचालित त्रैमासिक ई-शैक्षणिक पत्रिका ‘प्रज्ञानिका’ के द्वितीय खंड के तृतीय अंक का भव्य प्रकाशन किया गया। ‘टीचर्स ऑफ बिहार’ के मार्गदर्शन में प्रकाशित यह पत्रिका राज्यभर के शिक्षकों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे नवाचारी, रचनात्मक एवं उत्कृष्ट प्रयासों को सामने लाने तथा शैक्षिक विमर्श को नई दिशा देने का सशक्त माध्यम बन रही है।

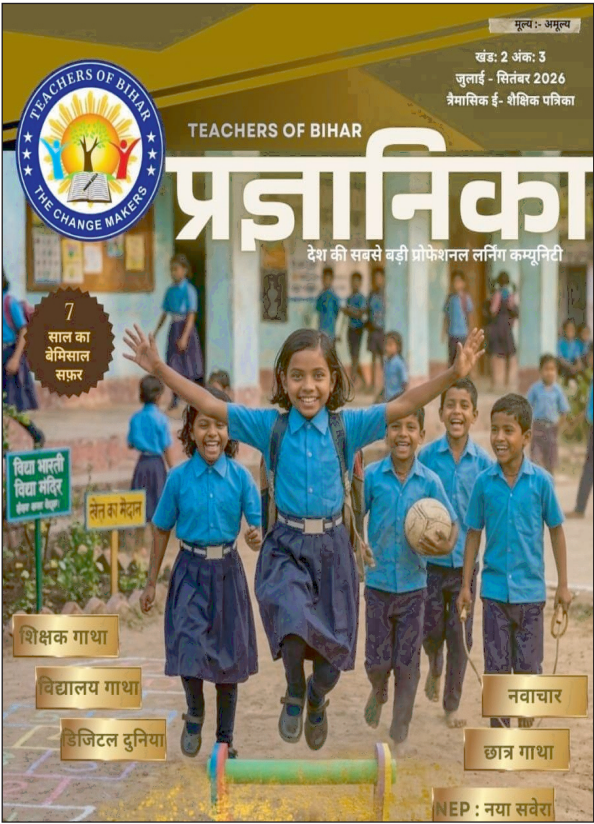
पत्रिका के इस अंक के संपादन में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय में राजभाषा परिषद के हिंदी विशेषज्ञ डॉ. चंदन श्रीवास्तव जी का प्रधान संपादक के रूप में कुशल मार्गदर्शन रहा। वहीं, मुजफ्फरपुर की संपादक शुभी श्रीवास्तव जी ने इस अंक के संपादन, संयोजन और प्रस्तुतीकरण में मुख्य एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी मेहनत, रचनात्मक दृष्टि और प्रभावी संयोजन के परिणामस्वरूप पत्रिका का यह अंक सुव्यवस्थित, आकर्षक और समृद्ध स्वरूप में पाठकों के समक्ष आया। संपादन टीम में सिवान की संपादक डॉ. पूनम कुमारी जी का भी विशेष योगदान रहा।

‘प्रज्ञानिका’ के इस अंक में शिक्षा, नवाचार, तकनीक, साहित्य, पर्यावरण, नीति, स्वास्थ्य, खेल, यात्रा और समासमयिक विषयों को विविध स्तम्भों के माध्यम से व्यापकता प्रदान की गई है। शिक्षक

गाथा’ स्तम्भ में शिक्षक स्रष्टा गगन कुमार जी ने मुजफ्फरपुर के राजकीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित श्री केशव कुमार जी की वैश्विक शैक्षणिक यात्रा और उनके शैक्षिक योगदान पर चर्चा की है। वहीं, ‘विद्यालय गाथा’ स्तम्भ में विद्यालय सूत्रधार पुरुषोत्तम कुमार जी ने स्वच्छ एवं हरित विद्यालय के महत्व को रेखांकित किया है। ‘छात्र गाथा’ के माध्यम से अंकुर कथाकार निवेदिता रानी जी ने बच्चों की प्रेरणा, प्रतिभा और उनकी संभावनाओं से जुड़े महत्वपूर्ण पक्षों को साझा किया है।

आधुनिक तकनीक से पाठकों को रूबरू कराते हुए ‘डिजिटल दुनिया’ स्तम्भ में टेक्निकल लीड इंजी. शिवेंद्र प्रकाश सुमन जी ने एआई टूल्स के उपयोग और उनकी संभावनाओं पर महत्वपूर्ण चर्चा की है।

‘आलेख’ स्तम्भ में शब्द शिल्पी अंजली आनंद जी, शब्द शिल्पी अमृता चंद्रा जी और शब्द शिल्पी विपिन कुमार चौधरी जी ने निपुण बिहार, एफएलएन, रोजगारपरक सोच तथा शिक्षा-संस्कृति से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। ‘नवाचार’ स्तम्भ में पहलेली मास्टर एवं नवोन्मेष लेखक मुकेश कुमार शर्मा जी ने भाषा शिक्षण में कला, संगीत और तकनीक के संगम पर अपने विचार साझा किए हैं। ‘NEP: नया सवेरा’ स्तम्भ में नीति चिंतक राघवेंद्र कुमार झा जी ने नई शिक्षा नीति और उपचारात्मक



शिक्षण से जुड़े महत्वपूर्ण पक्षों पर विमर्श किया है। वहीं, ‘विविध’ स्तम्भ में विविध विमर्शकार चंद्रकांत कुमार जी, विविध विमर्शकार बेबी अर्चना जी और विविध विमर्शकार आशीष अम्बर जी ने शिक्षकों की जनगणना यात्रा, जल संरक्षण और वैश्विक जल संकट जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक एवं पर्यावरणीय विषयों को प्रमुखता से उठाया है। ‘यात्रा वृत्तान्त’ स्तम्भ में पर्यटन

लेखक दुर्गाभांगे जी ने अपने यात्रा अनुभवों को पाठकों के साथ साझा किया है। वहीं, ‘काव्य रंग’ स्तम्भ में काव्य संयोजक ब्रजेश कुमार वर्मा जी, काव्य संयोजक एवं पर्यटन लेखक विनोद कुमार मंडल जी तथा काव्य संयोजक मधु कुमारी जी ने अन्य रचनाकारों के साथ मिलकर पर्यावरण एवं मानवीय संवेदनाओं से जुड़ी कविताएं प्रस्तुत की हैं। ‘योग एवं साधना’ स्तम्भ में

आरोग्यम दूत राकेश कुमार जी ने शरीर और मन के संतुलन के महत्व पर अपने विचार रखे हैं। ‘खेल जगत’ स्तम्भ में खेल विशेषज्ञ शुभम कुमार जी ने हॉकी की दुनिया पर चर्चा की है, जबकि ‘प्रेरक प्रेरंग’ स्तम्भ में सोनी वर्षा जी ने आत्म-संतोष के महत्व को रेखांकित किया है।

पत्रिका के आगामी कार्यक्रमों एवं गतिविधियों से संबंधित जानकारी कैलेंडर को ऑर्डिनेटर नेहा कुमारी जी ने प्रस्तुत की है। फोटो को ऑर्डिनेटर स्मिता ठाकुर जी ने बेहतरीन तस्वीरों का संयोजन किया है, जबकि समाचार संयोजक मृत्युंजय कुमार जी ने ‘सुखियों’ स्तम्भ के माध्यम से शिक्षा जगत की प्रमुख खबरों को साझा किया है। पत्रिका को आकर्षक और सुंदर स्वरूप प्रदान करने में डिजाइनिंग सहायक शुभम कुमार जी ने संपादक शुभी श्रीवास्तव जी का विशेष सहयोग किया।

पत्रिका के इस अंक को सफल बनाने में संस्थापक शिव कुमार जी, टेक्निकल लीड इंजी. शिवेंद्र प्रकाश सुमन जी और स्टेट टीम कोऑर्डिनेटर केशव कुमार जी का विशेष मार्गदर्शन रहा। इसके साथ ही पाठ शोधक डॉ. विनोद क. अध्याय जी, प्रमुख सलाहकार रंजेश कुमार जी तथा तकनीकी सहयोग के लिए अनुपमा प्रियदर्शिनी जी का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। उक्त जानकारी ‘टीचर्स ऑफ बिहार’ के प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने दी।



# 57वीं जीएसटी काउंसिल बैठक में झारखंड उठायेगा 22हजार करोड़ रुपए नुकसान का मुद्दा

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्माला सीतारामन समक्ष झारखंड वित्तमंत्री राधाकृष्ण किशोर रखेंगे मामला

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची,जीएसटी काउंसिल की 57वीं बैठक गुरुवार को नई दिल्ली में होगी. पहले यह बैठक 12 सितंबर को तय थी, लेकिन ब्रिक्स शिखर सम्मेलन और अन्य कारणों से 7 अक्टूबर कर दी गई थी. अब यह बैठक 8 अक्टूबर को होगी. नई दिल्ली के भारत मंडपम में सुबह 11 बजे से शुरू होने वाली इस बैठक की अध्यक्षता केंद्रीय वित्त मंत्री निर्माला सीतारामन करेंगी. देश के सभी राज्यों के वित्त मंत्री इसमें शामिल होंगे. जीएसटी काउंसिल की पिछली 56वीं बैठक 3-4 सितंबर 2025 को हुई थी. उसमें केंद्र और राज्यों ने जीएसटी की दरों और स्लेब में बड़े बदलाव का फैसला लिया था. करीब एक साल से ज्यादा समय बाद हो रही



इस बैठक पर सबकी नजरें टिकी हुई हैं. झारखंड की ओर से वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर सरकार की मांगों रखेंगे. उन्होंने कहा कि बैठक में जीएसटी बदलाव की वजह से राज्य की आय में आई गिरावट और नुकसान का मुद्दा उठाएंगे. मुख्य रूप से जीएसटी प्रक्रियाओं में सुधार पर चर्चा होने की संभावना है. उन्होंने बताया कि वैट में राज्य को क्या मिलना चाहिए और वैट पर टैक्स लगाने का अधिकार राज्य को मिलना चाहिए यह मुद्दा भी रखा जाएगा. मुआवजे (कम्पनसेशन) की मांग भी जीएसटी काउंसिल की बैठक में रखी जाएगी.

वित्त मंत्री ने कहा कि जीएसटी सरलीकरण के नाम पर राज्यों को होने वाले नुकसान का मुद्दा उठाया जाएगा. उन्होंने बताया कि एमएमडीआर से नुकसान के अलावा मनरेगा का नाम बदलकर जीरामजी किए जाने और जीएसटी सरलीकरण से झारखंड को 20-22 हजार करोड़ का नुकसान हुआ

काफी नुकसान होगा. जमीन राज्य की है और उसके नीचे का खनिज संवैधानिक रूप से केंद्र के अधिकार क्षेत्र में है. लेकिन धारा 9डी और धारा 2 जोड़ने से अब जमीन पर भी अधिकार उन्हीं का हो गया है. कल केंद्र सरकार कह सकती है कि वन नेशन वन टैक्स के तहत यह सब हमारा है. इससे राज्य का अधिकार सीमित हो जाएगा, भारी नुकसान होगा और संघीय ढांचे का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा.

वर्ष 2024-25 में झारखंड का एसजीएसटी वास्तविक संग्रह 13,980 करोड़ रुपये था. 2026-27 में सरकार ने एसजीएसटी का बजट लक्ष्य 14,564 करोड़ रुपये रखा है. झारखंड का जीएसटी

कलेक्शन चार वर्षों में 76 प्रतिशत बढ़ा है, लेकिन मुआवजा 98 प्रतिशत घट गया है. वित्तीय वर्ष 2021-22 में जीएसटी कम्पनसेशन के रूप में 1,526 करोड़ रुपये मिले थे, जबकि 2024-25 में सिर्फ 36 करोड़ रुपये ही मिले हैं.

## एसआईआर में नाम जोड़ने हेतु तीन दिन अन्तिम मौका

7से 9 अक्टूबर डिजीटाइजेशन कैप मतदान केंद्रों में : के 0 रविकुमार मुख्य चुनाव अधिकारी, झारखंड

कार्तिक कुमार परिच्छा स्टेट हेड झारखंड

रांची, झारखंड में एसआईआर की प्रक्रिया अब अंतिम चरण में है। यदि अब भी किसी मतदाता का नाम वोटर लिस्ट में नहीं जुड़ पाया है, तो अगले तीन दिनों में उन्हें विशेष मौका मिला मिलने वाला है। इसे लेकर सभी मतदान केंद्रों पर विशेष कैप का आयोजन किया जा रहा है।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने एसआईआर-2026 के तहत मतदाताओं को जारी नोटिस की सुनवाई एवं मतदाता सूची में पात्र नागरिकों के नाम शामिल करने को लेकर सभी जिला निर्वाचन पदाधिकारियों, ईआओ और एईआरओ को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने निर्देश दिया कि 7, 8 और 9 अक्टूबर को सभी मतदान केंद्रों पर विशेष

डिजिटाइजेशन कैप आयोजित किए जाएं। जिला निर्वाचन पदाधिकारी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक कर कैप की जानकारी साझा करें और क्षेत्र के छूटे हुए पात्र नागरिकों को मतदाता सूची में शामिल कराने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने कहा कि बीएलओ को प्राप्त फॉर्म-6, फॉर्म-7 एवं फॉर्म-8 के डिजिटाइजेशन में तेजी लाएं एवं बीएलओ को प्राप्त आवेदनों के समयबद्ध डिजिटाइजेशन के लिए 7, 8 एवं 9 अक्टूबर के विशेष डिजिटाइजेशन कैप में सहायता उपलब्ध कराएं।

उन्होंने कैप का सोशल मीडिया एवं स्थानीय स्तर पर व्यापक प्रचार-प्रसार करने तथा स्थानीय समस्याओं की पहचान कर उनके समाधान की कार्यवाई सुनिश्चित करने को कहा

के. रवि कुमार ने कहा कि मतदाता सूची में किसी व्यक्ति के नाम के सामने तार्किक विसंगति के कई कारण हो सकते हैं। गणना प्रपत्र में गलत जानकारी दर्ज होना, विगत एसआईआर में गलत मैपिंग अथवा पूर्व में दर्ज जानकारी में त्रुटि



इसके कारण हो सकते हैं। वर्तमान सुनवाई का उद्देश्य विगत के एसआईआर के त्रुटियों को सुधारना नहीं, बल्कि वर्तमान के एसआईआर की सूची को त्रुटिरहित बनाना एवं पात्र भारतीय नागरिकों का मतदाता सूची में निबंधन सुनिश्चित करना है।

इसके लिए भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित दस्तावेजों के आधार पर यह सुनिश्चित किया जाए कि संबंधित व्यक्ति भारतीय नागरिक है, 1 अक्टूबर 2026 को 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुका है और संबंधित मतदान केंद्र क्षेत्र का सामान्य निवासी है।

के. रवि कुमार ने 10 अक्टूबर को राज्य के सभी मतदान केंद्रों पर

मेगा हेल्पडेस्क की व्यवस्था सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि मेगा हेल्पडेस्क पर नागरिकों को नोटिस की सुनवाई, दावा-अपति, मतदाता सूची में नाम जोड़ने तथा संबंधित प्रक्रियाओं की जानकारी दी जाएगी। उन्होंने कहा कि जिन क्षेत्रों में विशेष रूप से जनजातीय समूहों, पिछड़े वर्गों, दिव्यांगजनों, वृद्ध मतदाताओं, थर्ड जेंडर, सेक्स वर्कर अन्य वंचित वर्गों के पात्र भारतीय नागरिक हैं वहां तक पहुंच बनाने के लिए विशेष आउटरीच प्रोग्राम चलाकर उनकी पहचान की जाए और आवश्यक प्रक्रिया एवं दस्तावेजों के संबंध में सहायता दी जाए।

## SIR विरोधी पदयात्रा में शामिल हुआ BJD, प्लेकार्ड लेकर नारेबाजी करते हुए सांसदों ने किया विरोध

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

नई दिल्ली/भूबनेश्वर : SIR विरोधी पदयात्रा में BJD भी शामिल हुआ। नई दिल्ली में INDIA गठबंधन की ओर से आयोजित विरोध पदयात्रा में BJD के राज्यसभा सांसदों ने हिस्सा लिया। SIR के मुद्दे पर मुख्य निर्वाचन आयुक्त (CEC) ज्ञानेश कुमार के मनमाने रवैये तथा देशभर में 13 करोड़ से अधिक मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से हटाए जाने के मुद्दे को लेकर विपक्षी दलों द्वारा आज विरोध पदयात्रा निकाली गई, जिसमें BJD भी शामिल हुआ। BJD सुप्रियो तथा विपक्ष के नेता नवीन पटनायक के निर्देश पर पार्टी के सांसदों ने इस पदयात्रा में हिस्सा लिया। पदयात्रा के दौरान BJD के राज्यसभा सांसदों ने प्लेकार्ड लेकर



नारेबाजी की और विरोध प्रदर्शन किया। राज्यसभा में BJD संसदीय दल के नेता मानस मंगराज ने इस संबंध में जानकारी दी।

यह पदयात्रा मुख्य निर्वाचन आयुक्त के कार्यालय तक निकाली गई। SIR के माध्यम से 'वोट चोरी' का आरोप लगाते हुए INDIA गठबंधन मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग

कर रहा है। संसद में सभी विपक्षी दल एकजुट होकर यह पदयात्रा कर रहे हैं। ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर 19 विपक्षी दलों की ओर से 'सेव डेमोक्रेसी मार्च' निकाला गया। बीजू जनता दल (BJD) ने लोकतंत्र की रक्षा के लिए मुद्दे के आधार पर INDIA गठबंधन को अपना समर्थन दिया है।

## 5 दिन बाद भी बालिअंता पुलिस के हाथ खाली, बालकाटी में पत्रकार से मारपीट के बाद आरोपी फरार



मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: भुवनेश्वर के बालकाटी में पत्रकार पर जानलेवा हमले की घटना को 5 दिन बीत चुके हैं, लेकिन अभी तक बालिअंता पुलिस के हाथ खाली हैं। दो FIR दर्ज होने के बावजूद एक भी आरोपी गिरफ्तार नहीं हुआ है। सवाल उठ

रहा है कि क्या बालिअंता थाना विक चुका है ?

सरकारी जमीन की लूट और अवैध चारदीवारी के खिलाफ खबर करने पर 10 से अधिक माफिया गुंडों ने पत्रकार को घेर लिया और लोहे की रॉड से बेरहमी से पीटकर उसकी हड्डियाँ तक चकनाचूर कर दीं। कैमरे के सामने खून की होली

खेली गई। आरोप है कि पुलिस जानबूझकर गंभीर धाराएं हटाकर मामूली धाराएं लगाते हुए आरोपियों को बचा रही है। आरोपी कथित तौर पर कह रहा है, "थाना मेरे हाथ में है।" यह पूरा घटनाक्रम इस बात का संकेत दे रहा है कि बालिअंता में कानून-व्यवस्था का कोई भय नहीं है और माफिया राज चल रहा है।



लेखक: एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी, गोदिया (महाराष्ट्र)

गोदिया - वैश्विक परिदृश्य में 6 अक्टूबर 2026 का दिन भारत के लिए केवल आर्थिक उपलब्धि या

घरेलू राजनीतिक टकराव का दिन नहीं रहा, बल्कि यह दिन दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की संस्थागत शक्ति, संवैधानिक परिपक्वता और न्यायिक संयम - तीनों को एक साथ परखने वाला दिन बन गया। एक ओर पश्चिम एशिया सहित दुनिया के अनेक हिस्सों में युद्ध, भू-राजनीतिक तनाव, ऊर्जा असुरक्षा और आर्थिक अनिश्चितता के बादल मंडरा रहे हैं, वहीं भारत की अर्थव्यवस्था को लेकर विश्व बैंक ने अपने ताजा आकलन में विकास दर बढ़ा दी है। दूसरी ओर उसी दिन दिल्ली में लगभग 140 विपक्षी सांसदों का चुनाव आयोग तक मार्च और सुप्रीम कोर्ट का प्रस्तावना पाठ पर बड़ा फैसला - एप भारत की लोकतांत्रिक खूबसूरती का शक्ति-परीक्षण

तथ्य - क्या हुआ 6 अक्टूबर 2026 को ?

तथ्य 1 - आर्थिक मोर्चा: विश्व बैंक का 7.1% अनुमान विश्व बैंक की अक्टूबर 2026 की South Asia Economic Update रिपोर्ट इसी दिन प्रकाशित हुई। अप्रैल 2026 में FY 2026-27 के लिए अनुमान 6.6% था, जिसे बढ़ाकर 7.1% किया गया। कारण - मजबूत प्रचलु मांग, उद्योग और सेवा क्षेत्र की गति और सुधारों की निरंतरता। हालांकि कृषि और मानसून जोखिम, वैश्विक ऊर्जा की कीमतें और खाद्य

महंगाई पर सतर्कता भी रिपोर्ट में है।

तथ्य 2 - राजनीतिक मोर्चा: 140 सांसदों का मार्च INDIA गठबंधन के नेताओं और लगभग 140 विपक्षी सांसदों ने संसद भवन से निर्वाचन आयोग की ओर मार्च किया। प्रमुख मांग - मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) को वापस लेने की। राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाड़ा, मल्लिकार्जुन खड़गे और अखिलेश यादव सहित प्रमुख नेताओं की मौजूदगी रही। पुलिस ने मार्च को आयोग कार्यालय से पहले रोका और कई नेताओं को हिरासत में लिया। विपक्ष SIR में नाम हटाने का आरोप लगा रहा है, जबकि निर्वाचन आयोग इसे सूची को शुद्ध और अद्यतन करने की कवायद बता रहा है।

तथ्य 3 - न्यायिक मोर्चा: सुप्रीम कोर्ट का प्रस्तावना फैसला तीन सदस्यीय पीठ ने स्कूलों की प्रार्थना सभा में संविधान की प्रस्तावना का दैनिक पाठ अनिवार्य करने की मांग वाली जनहित याचिका खारिज कर दी। याचिका दिल्ली विश्वविद्यालय के राजधानी कॉलेज के सहायक प्रोफेसर ने दायर की थी, जिसमें राजस्थान, महाराष्ट्र और कर्नाटक के प्रयासों और अनुच्छेद 21A का हवाला दिया गया था। कोर्ट ने कहा - प्रस्तावना पहले से ही कक्षा 6 से

पाठ्यक्रम का हिस्सा है, और इसका दैनिक अनुष्ठान अनिवार्य करना नीति-निर्माण है, जो सरकार और शैक्षणिक संस्थाओं का क्षेत्र है।

मुख्य बिंदु - व्यापक विश्लेषण

मुख्य बिंदु 1 - अर्थव्यवस्था में आत्मविश्वास: जब विकसित अर्थव्यवस्थाएं युद्ध, अपूर्ण श्रृंखला व्यवधान और महंगाई से जुझ रही हैं, तब 7.1% अनुमान वैश्विक निवेशकों के लिए भारत की अंतर्निहित क्षमता पर भरोसे का संकेत है। लेकिन यह चेतावनी भी है कि ऊर्जा और खाद्य सुरक्षा के लिए नीतियों को गतिशील रखना होगा।

मुख्य बिंदु 2 - लोकतंत्र में बहस:

निर्वाचन आयोग भारत के लोकतांत्रिक ढांचे की केंद्रीय संवैधानिक संस्था है। चुनाव सिर्फ सरकार चुनाव नहीं, सार्वभौमिक मताधिकार और सत्ता के शांतिपूर्ण हस्तांतरण की आधारशिला हैं। संस्थाओं पर सवालों का समाधान आरोप-प्रत्यारोप से नहीं, पारदर्शिता, दस्तावेजी प्रमाण और संवैधानिक प्रक्रिया से होना चाहिए। विरोध लोकतंत्र का स्वाभाविक हिस्सा है, लेकिन विश्वसनीयता का मूल्यंकन कानूनी प्रक्रियाओं से ही होना चाहिए।

मुख्य बिंदु 3 - न्यायपालिका में संयम: यह फैसला न्यायिक

सक्रियता के बजाय न्यायिक संयम का उदाहरण है। कोर्ट ने प्रस्तावना के महत्व को कम नहीं किया, बल्कि शिक्षा की पद्धति सरकार का क्षेत्र माना। अंतरराष्ट्रीय संदर्भ - अमेरिका में 1943 का West Virginia State Board of Education vs Barnette मामला और भारत में 1986 का Bijoe Emmanuel vs State of Kerala फैसला। दोनों का सिद्धांत - देशभक्ति और संवैधानिक निष्ठा का मूल्य तभी है जब उसमें समझ और स्वतंत्र चेतना हो, जबरदस्ती नहीं।

संपादकीय निष्कर्ष: 6

अक्टूबर 2026 का भारत दुनिया को बहुआयामी संदेश देता है - अर्थव्यवस्था में आत्मविश्वास, लोकतंत्र में बहस और न्यायपालिका में संयम। आर्थिक शक्ति वैश्विक प्रविष्टा बढ़ाती है, लेकिन उसे स्थायी बनाने के लिए संस्थागत विश्वसनीयता भी उतनी ही आवश्यक है। युद्ध और अनिश्चितता से घिरी दुनिया में भारत की सबसे बड़ी शक्ति यही बन सकती है - विकास की गति के साथ लोकतंत्र की गहराई और संविधान की गरिमा।

http://www.newsparivahan.com \*editor@newsparivahan.com

## झारखंड में हिरासत रख महिला के साथ दुष्कर्म, गृहसचिव बंदना हाजिर हुई हाईकोर्ट में

सीलबंद लिफाफे में रिपोर्ट पेश ,एक कांस्टेबल सहित तीन पर दुष्कर्म का आरोप

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, अपराधिक मामले में बरी होने के बावजूद महिला को हजारीबाग स्थित डिटेशन सेंटर में कथित तौर पर अवैध रूप से हिरासत में रखे जाने और उसके साथ दुष्कर्म के आरोपों के मामले में झारखंड हाईकोर्ट के सख्त निर्देश के बाद सोमवार को गृह सचिव वंदना



दादेल सोमवार को हाईकोर्ट में व्यक्तिगत रूप से पेश हुईं। जस्टिस सुजीत नारायण प्रसाद और जस्टिस अखिल कुमार की खंडपीठ ने मामले की सुनवाई के दौरान राज्य सरकार से महिला की हिरासत के

कानूनी आधार और पूरे प्रकरण पर स्पष्ट जवाब मांगा। सुनवाई के दौरान झारखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण ( झालसा ) की ओर से जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, हजारीबाग की जांच रिपोर्ट सीलबंद लिफाफे में अदालत के समक्ष पेश की गई। रिपोर्ट के मुताबिक, महिला ने अपने बयान में आरोप लगाया है कि कांस्टेबल रंजीत महतो समेत तीन पुलिसकर्मियों ने उसके साथ दुष्कर्म किया। मामला घटनाक्रम कार्यक्रमता अपूर्व विवेक की ओर से दायर बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका से जुड़ा है। याचिका में महिला को हजारीबाग

डिटेशन सेंटर में रखे जाने को चुनौती दी गई है। महिला की ओर से अधिवक्ता उज्ज्वनी चटर्जी ने अदालत को बताया कि महिला एक आपराधिक मामले में बरी हो चुकी थी, इसके बावजूद उसे डिटेशन सेंटर में रखा गया। अदालत ने इस पर गंभीर सवाल उठाया कि जब महिला अपनी सजा पूरी कर चुकी थी, तो उसे आगे किस। सुनवाई के दौरान यह भी बताया गया कि फोरेंसिक एक्ट के तहत महिला तीन वर्ष की सजा पूरी कर चुकी थी। खंडपीठ ने यह जानना चाहा कि सजा पूरी होने के बाद भी उसकी

हिरासत जारी रखने का कानूनी आधार क्या था। अदालत ने कहा कि संविधान का अनुच्छेद 21 प्रत्येक व्यक्ति को जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार देता है और कानून के वैध प्राधिकार के बिना किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं छीनी जा सकती। पिछली सुनवाई में अदालत ने झालसा के माध्यम से डीलएसएफ, हजारीबाग की टीम को महिला से बातचीत कर उसका बयान दर्ज करने का निर्देश दिया था एस पी भी विडियो कॉन्फ्रेंसिंग सुनवाई से जुड़े। उन्होंने महिला को न्याय दिलाने का आश्वासन दिया।

